सिविल सेवा परीक्षा...

संस्कृति IAS

सामान्य अध्ययन

कला एवं संस्कृति

भाग-2

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

सिविल सेवा परीक्षा...

संस्कृति IAS

सामान्य अध्ययन

कला एवं संस्कृति

भाग-2

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

9555-124-124 sanskritiiasedu@gmail.com

प्रिय विद्यार्थी,

सबसे पहले संस्कृति IAS के 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' का हिस्सा बनने पर आपको बहुत बधाई।

सिविल सेवा परीक्षा, जिसे आई.ए.एस. परीक्षा के नाम से जाना जाता है; यह देश की प्रतिष्ठित लोक सेवाओं में चयन के लिये आयोजित होने वाली सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगी परीक्षा है। आज देश में युवाओं की एक बड़ी संख्या है जो सिविल सेवाओं में जाकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहते हैं। परंतु, गंभीरतापूर्वक इस परीक्षा की तैयारी करना हर किसी के लिये संभव नहीं हो पाता। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि इस परीक्षा की तैयारी के लिये दिल्ली, प्रयागराज या लखनऊ जैसे शहरों में रहना किसी भी निम्न-मध्यम वर्गीय पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी के लिये संभवप्राय नहीं होता; दूसरा, एक बड़ी संख्या ऐसे विद्यार्थियों की भी है जो पहले से नौकरी कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों के लिये मुख्य समस्या समय की होती है क्योंकि कोचिंग संस्थान में जाकर तैयारी करने में डेढ़-दो वर्ष का समय लगता है, जबकि नौकरी से इतनी लंबी छुट्टी मिलनी प्राय संभव नहीं होती।

ऐसे ही विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए संस्कृति IAS ने 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' की शुरुआत की है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत, कम फीस में विद्यार्थियों को किसी भी कोर्स की पूरी पाठ्य सामग्री उनके घर पर भेजी जाती है। यह पाठ्य सामग्री सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप होती है। अगर कोई विद्यार्थी गंभीरता से इस पाठ्य सामग्री का अध्ययन करता है तो उसकी इतनी तैयारी निश्चित रूप से हो जाएगी कि वह सिविल सेवा परीक्षा को पास कर सके।

हालाँकि, किसी भी विद्यार्थी के दिमाग में यह संशय उत्पन्न होना स्वभाविक है कि अगर इस पाठ्य सामग्री को पढ़कर यह परीक्षा पास हो सकती है तो फिर कोचिंग संस्थान में पढ़ाई करने की क्या आवश्यकता है? अत: यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत आपको सिर्फ संपूर्ण पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। क्लासरूम प्रोग्राम में पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त विद्यार्थी की तैयारी को प्रभावी बनाने के लिये कई तरह के कार्यक्रम चलाए जाते हैं, जैसे नियमित कक्षा, क्लास टेस्ट, टेस्ट सीरीज़, शंका निवारण सत्र, नियमित रूप से अध्यापक से मिलकर तैयारी को बेहतर बनाने की सुविधा इत्यादि।

अत: 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' को क्लासरूम प्रोग्राम का विकल्प नहीं कहा जा सकता है। यद्यपि, ऐसे विद्यार्थी जो किसी कारणवश दिल्ली या प्रयागराज जैसे शहरों में जाकर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी नहीं कर सकते हैं, ऐसे विद्यार्थियों के लिये 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' अपनी प्रकृति में निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ विकल्प है।

विधिक घोषणाएँ

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक, उससे किसी व्यक्ति विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- © कॉपीराइट: संस्कृति पब्लिकेशन्स, सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुन: प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

विषय-सूची

इकाई	टॉपिक	पृष्ठ संख्या
7	भारतीय संगीत	1-20
8	भारतीय नाट्यकला	21-30
9	भारतीय पुतली कला	31-36
10	भारत की परंपरागत युद्धकलाएँ	37-41
11	भारतीय हस्तशिल्प	42-54
12	भारतीय भाषा एवं साहित्य	55-90
13	मेले एवं त्योहार	91-101
14	भारत में धर्म एवं दर्शन	102-142
15	भारत में कैलेंडर	143-148
16	भारत के सांस्कृतिक संस्थान	149-162

❑❑❑❑❑

विस्तृत अनुक्रम

इकाई	टॉपिक	पृष्ठ संख्या
7	**भारतीय संगीत**	**1-20**
	• परिचय • उत्पत्ति एवं विकास • भारतीय संगीत रचना विज्ञान ➤ स्वर ➤ राग ➤ ताल ➤ थाट ➤ रस ➤ समय ➤ अन्य घटक • भारतीय संगीत शैली का वर्गीकरण • शास्त्रीय संगीत ➤ हिंदुस्तानी संगीत शैली ➤ कर्नाटक संगीत शैली ➤ हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत का तुलनात्मक अध्ययन • घराना • लोक संगीत ➤ विभिन्न राज्यों के लोक संगीत • शास्त्रीय और लोक संगीत का समागम • आधुनिक संगीत • कुछ प्रमुख संगीतकार • कुछ प्रमुख वाद्ययंत्र ➤ प्रमुख वाद्ययंत्र एवं उनसे संबंधित कलाकार	
8	**भारतीय नाट्यकला**	**21-30**
	• भूमिका • शास्त्रीय संस्कृत नाट्यकला • लोक नाट्यकला • आधुनिक भारत में नाट्यकला	
9	**भारतीय पुतली कला**	**31-36**
	• भूमिका • भारत में पुतली कला ➤ सूत्र या धागा पुतली कला ➤ छाया पुतली कला ➤ दस्ताना पुतली कला ➤ छड़ पुतली कला • आधुनिक पुतली कला	
10	**भारत की परंपरागत युद्धकलाएँ**	**37-41**
	• परिचय • कलारिपयाट्टू • सिलांबम • कुट्टू वरिसाई • थांग-टा • सरित-सरक • मर्दानी खेल • लाठी खेल • थोडा • इंबुआन कुश्ती • मुष्टि युद्ध • काठी सामू • गतका • चेइबी गद-गा • परी-खंडा • सकय • पाईका अखाड़ा	

इकाई	टॉपिक	पृष्ठ संख्या
11	**भारतीय हस्तशिल्प**	**42-54**
	• परिचय • काँच निर्मित हस्तशिल्प • हाथीदांत पर हस्तशिल्प • टेराकोटा हस्तशिल्प • धातु हस्तशिल्प • कपड़े पर हस्तशिल्प • कढ़ाई कला • बुनाई कला • भूमि पर निर्मित कलाएँ	
12	**भारतीय भाषा एवं साहित्य**	**55-90**
	• परिचय • शास्त्रीय भाषाएँ • भारत की प्राचीन लिपियाँ **प्राचीन भारतीय साहित्य** • वैदिक साहित्य ➤ वेद ➤ ब्राह्मण ➤ आरण्यक ➤ उपनिषद् ➤ वेदांग ➤ सूत्र साहित्य ➤ पुराण एवं उपपुराण ➤ धर्मशास्त्र • महाकाव्य ➤ रामायण ➤ महाभारत • शास्त्रीय संस्कृत साहित्य • पालि और प्राकृत में साहित्य • द्रविड़ साहित्य ➤ तमिल साहित्य ➤ तेलगू साहित्य ➤ मलयालम साहित्य ➤ कन्नड़ साहित्य **मध्यकालीन साहित्य** • फारसी साहित्य • उर्दू साहित्य • हिंदी साहित्य • बांग्ला साहित्य • मराठी साहित्य • पंजाबी साहित्य **आधुनिक साहित्य** • हिंदी साहित्य • बंगाली साहित्य	
13	**मेले एवं त्योहार**	**91-101**
	• परिचय • राष्ट्रीय पर्व • धार्मिक त्योहार • लोक पर्व ➤ उत्तर भारत के पर्व ➤ दक्षिण भारत के पर्व ➤ पूर्वोत्तर भारत के पर्व • सांस्कृतिक महोत्सव	
14	**भारत में धर्म एवं दर्शन**	**102-142**
	भारतीय धर्म • पृष्ठभूमि • सिंधु-घाटी सभ्यता में धर्म • सनातन/हिंदू धर्म • वैदिक धर्म • हिंदू धर्म के प्रमुख मत • वैष्णव परंपरा के प्रमुख संप्रदाय • शैव धर्म के प्रमुख संप्रदाय • दक्षिण भारत में शैव संप्रदाय • शाक्त या शक्ति संप्रदाय • अन्य हिंदू परंपराएँ • आधुनिक काल में हिंदू धर्म के पुनरुत्थान के लिये चलाए गए आंदोलन • बौद्ध धर्म • जैन धर्म • इस्लाम • ईसाई धर्म • पारसी धर्म • यहूदी धर्म • सिख धर्म • भक्ति एवं सूफी आंदोलन **भारतीय दर्शन** • भूमिका • रूढ़िवादी विचारधारा ➤ सांख्य दर्शन ➤ योग दर्शन ➤ न्याय दर्शन ➤ वैशेषिक दर्शन ➤ मीमांसा दर्शन ➤ वेदांत दर्शन • धर्म-विरोधी विचारधारा ➤ चार्वाक/लोकायत दर्शन	

इकाई	टॉपिक	पृष्ठ संख्या
15	**भारत में कैलेंडर**	**143-148**
	• परिचय • कैलेंडर निर्माण हेतु महत्त्वपूर्ण संकल्पनाएँ ➤ भूमध्यरेखा या विषुवत रेखा ➤ विषुव ➤ अयनांत • कैलेंडर के निर्माण हेतु अपनाई गई पद्धतियाँ ➤ सौर पद्धति ➤ चंद्र पद्धति ➤ चंद्र-सौर पद्धति • हिंदू पंचांग में प्रयुक्त विविध माह • हिंदू पंचाग में प्रयुक्त पक्ष एवं तिथि (दिवस) • हिंदू पंचांग ➤ तिथि ➤ वार ➤ करण ➤ नक्षत्र ➤ योग • विभिन्न युगों में निर्मित भारतीय कैलेंडर ➤ विक्रम संवत् ➤ शक संवत् ➤ हिजरी कैलेंडर ➤ ग्रेगोरियन कैलेंडर • भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर	
16	**भारत के सांस्कृतिक संस्थान**	**149-162**
	• परिचय • भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण • भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण • भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् • नेहरू मेमोरियल संग्रहालय एवं पुस्तकालय • भारतीय शिल्प परिषद् • भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद् • इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय • सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र • भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत ट्रस्ट • इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र • क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र • ऑल इंडिया रेडियो • दूरदर्शन • भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार • राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन • कलाक्षेत्र फाउंडेशन • संगीत नाटक अकादमी • साहित्य अकादमी • ललित कला अकादमी • राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय • फिल्म समारोह निदेशालय • भारत भवन • एशियाटिक सोसायटी • भारतीय संग्रहालय, कोलकाता • केंद्रीय सचिवालय पुस्तकालय • राष्ट्रीय संग्रहालय • राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय • राष्ट्रीय पुस्तक न्यास • राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् • इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	

❑❑❑❑❑

इकाई

7

भारतीय संगीत
(Indian Music)

- परिचय
- उत्पत्ति एवं विकास
- भारतीय संगीत रचना विज्ञान
  - स्वर
  - राग
  - ताल
  - थाट
  - रस
  - समय
  - अन्य घटक
- भारतीय संगीत शैली का वर्गीकरण
- शास्त्रीय संगीत
  - हिंदुस्तानी संगीत शैली
  - कर्नाटक संगीत शैली
  - हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत का तुलनात्मक अध्ययन
- घराना
- लोक संगीत
  - विभिन्न राज्यों के लोक संगीत
- शास्त्रीय और लोक संगीत का समागम
- आधुनिक संगीत
- कुछ प्रमुख संगीतकार
- कुछ प्रमुख वाद्ययंत्र
  - प्रमुख वाद्ययंत्र एवं उनसे संबंधित कलाकार

परिचय (Introduction)

वे प्राकृतिक ध्वनियाँ जिनमें लय हो वे संगीत के अंतर्गत आती हैं। संगीत की उत्पत्ति भावबद्ध ध्वनियों से होती है। वह ललित कला जिसके द्वारा स्वर और लय के माध्यम से भावों को प्रकट किया जाता है, 'संगीत' कहलाती है। दूसरे शब्दों में, स्वर, ताल, शुद्ध, आचरण और शुद्ध मुद्रा के गेय विषय ही संगीत है। वास्तव में, स्वर और लय ही संगीत का आधार है। गीत शब्द में 'सम्' उपसर्ग जोड़ने से संगीत शब्द उत्पत्ति होती है। 'सम्' अर्थात् 'सहित' और 'गीत' का अर्थ है 'गान' अर्थात् नृत्य एवं वादन के साथ किया गया गान 'संगीत' कहलाता है। भारतीय संगीत की अवधारणा में अलग-अलग कलाओं के रूप में स्वीकृत गायन, वादन एवं नृत्य कलाओं के संयुक्त स्वरूप को संगीत की संज्ञा प्रदान की गई है।

उत्पत्ति एवं विकास (Origin and Development)

- भारतीय संगीत का आविर्भाव वैदिक काल (लगभग 2000 ईसा पूर्व) से माना जाता है। ऋग्वेद में आर्यों के मनोरंजन के प्रमुख साधन के रूप में संगीत का उल्लेख मिलता है। इस काल के प्रमुख ग्रंथ 'सामवेद' को भारतीय संगीत का मूल माना जाता है जिसमें उन वैदिक ऋचाओं का संग्रह है जिनसे देवताओं की स्तुति की जाती थी। सामवेद में उच्चारण के आधार पर तीन प्रकार के– ग, रे और स (इन्हें सामिक भी कहा जाता है) तथा संगीत के आधार पर सात प्रकार के स्वरों का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त, दो भारतीय महाकाव्यों– रामायण और महाभारत की रचनाओं में भी संगीत का मुख्य प्रभाव दिखाई पड़ता है। साथ ही, तैत्तरीय उपनिषद्, ऐतरेय उपनिषद्, शतपथ ब्राह्मण, याज्ञवल्क्य- रत्न प्रदीपिका, प्रतिभाष्यप्रदीप इत्यादि ग्रंथों से भी हमें तत्कालीन संगीत के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

अन्य घटक : अलाप, तान, मुर्की, अलंकरण

जिस राग में मंद गति से वादी, सम्वादी एवं राग की अन्य मूक विशेषताओं पर बल दिया जाता है उसे 'अलाप' कहते हैं। इसका गायन राग के आरंभ में किया जाता है। तीव्र गति में आधारभूत स्वरों को 'तान' कहते हैं। 3 या 4 स्वरों की छोटी तान को 'मुर्की' कहा जाता है एवं क्रमबद्ध रूप से स्वरों का मधुर संयोजन 'अलंकरण' कहलाता है।

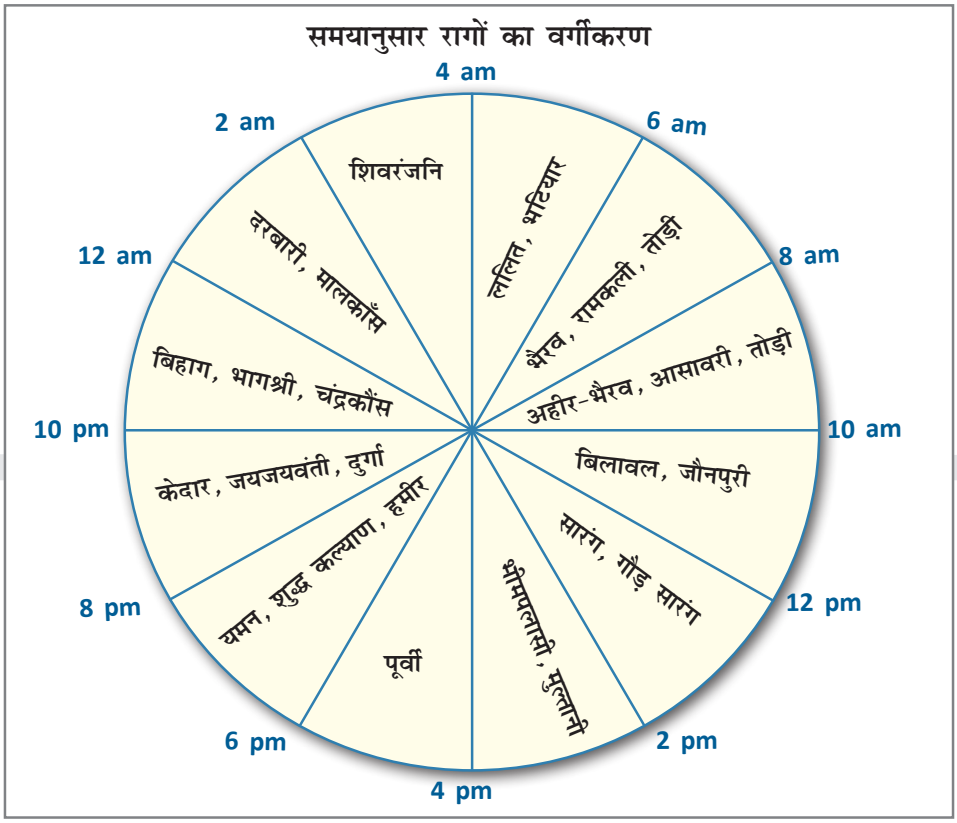

राग एवं थाट में अंतर	
राग	**थाट**
इनकी उत्पत्ति का आधार थाट है।	ये स्वरों से निर्मित होते हैं।
इनमें कम-से-कम 5 स्वरों का होना आवश्यक है।	इनमें 7 स्वरों का होना आवश्यक है।
इनमें आरोह व अवरोह दोनों स्वरों का होना आवश्यक है।	इनमें केवल आरोही स्वर होते हैं।
चूँकि, ये गाए जाते हैं अत: इनका मधुर होना आवश्यक है।	चूँकि, इनका गायन नहीं होता अत: इनका मधुर होना आवश्यक नहीं है।
वादी व सम्वादी होते हैं।	ये वादी व सम्वादी नहीं होते हैं।
भावनाओं के आवाहन के आधार पर इनका नामकरण होता है।	लोकप्रिय रागों के नाम पर इनका नामकरण होता है।

- 'शहनाई राजा' के नाम से उस्ताद बिस्मिल्लाह खां को जाना जाता है, जिन्होंने अपने भावपूर्ण वादन से शहनाई को उच्च पराकाष्ठा प्रदान की। शहनाई वादन के लिये इन्हें वर्ष 2001 में सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।
- प्राकृतिक बाँस से निर्मित वाद्ययंत्र बाँसुरी के वादन के लिये पंडित हरिप्रसाद चौरसिया को जाना जाता है।

घन वाद्य

- ये वाद्ययंत्र इडियोफोन श्रेणी के होते हैं जिन्हें परस्पर आघात के माध्यम से बजाया जाता है।
- मँजीरा, करताल, झाँझ आदि प्रमुख घन वाद्ययंत्र हैं।
- मँजीरा पीतल का छोटा-सा झाँझ होता है जिसका प्रयोग मंदिरों में किया जाता है।

मँजीरा

तत वाद्य

- ये वाद्ययंत्र कार्डोफोन या स्ट्रिंग श्रेणी के होते हैं जिनमें तार अथवा ताँत का प्रयोग होता है।
- वीणा, तंबूरा, संतूर, सरोद, वायलिन, सारंगी, सितार आदि प्रमुख तत वाद्ययंत्र हैं।
- संतूर का भारतीय नाम 'शततंत्री वीणा' अर्थात् सौ तारों वाली वीणा है।
- सारंगी गायकी प्रधान वाद्ययंत्र है, जिसे अन्य वाद्ययंत्रों की जुगलबंदी के साथ प्रस्तुत किया जाता है।
- सितार वादन के लिये पंडित रविशंकर को वर्ष 1999 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

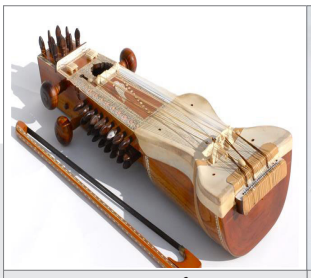

शहनाई

बाँसुरी

प्रमुख वाद्ययंत्र एवं उनसे संबंधित प्रमुख कलाकार			
प्रमुख वाद्ययंत्र	**संबंधित कलाकार**	**प्रमुख वाद्ययंत्र**	**संबंधित कलाकार**
शहनाई	उस्ताद बिस्मिल्लाह खां	तबला	अमीर हुसैन खां
बाँसुरी	पंडित हरिप्रसाद चौरसिया	तबला	भैरव प्रसाद
बाँसुरी	पन्नालाल घोष	तबला	किशन महाराज
सितार	पंडित रविशंकर	तबला	सामता प्रसाद मिश्र
सितार	विलायत अली खां	तबला	अल्ला रक्खा खां
सितार	शशिमोहन भट्ट	वीणा	उमराव खां
सरोद	अमजद अली खां	पखावज	कुदाऊ सिंह पखावजी
सरोद	अली अकबर खां	संतूर	तरुण भट्टाचार्य
सरोद	अलाउद्दीन खां	संतूर	शिवकुमार शर्मा
सरोद	सादत खां	गिटार	केशव तलेगाँवकर
		गिटार, रुद्रवीणा	विश्व मोहन भट्ट

इकाई

8

भारतीय नाट्यकला
(Indian Theatre)

- भूमिका
- शास्त्रीय संस्कृत नाट्यकला
- लोक नाट्यकला
- आधुनिक भारत में नाट्यकला

भूमिका (Introduction)

- नाटक संस्कृत के 'नट' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है– 'नर्तक'। यह एक संपूर्ण विधा है जिसमें अभिनय, संवाद, कविता, संगीत इत्यादि का एक साथ समायोजन होता है।
- भारत में इस कला का उद्भव यूनानी नाटकों से भी प्राचीन है। सीताबोंगा और जोगीमारा की गुफाएँ भारतीय नाट्यकला के प्राचीनतम साक्ष्य के रूप में हैं।
- भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र' इस कला का एक प्राचीन ग्रंथ है जिसमें सुव्यवस्थित नाट्यकला का दर्शन होता है।
- प्राचीन भारतीय नाट्यकला को मुख्य रूप से दो शास्त्रीय संस्कृत और लोक नाट्यकलाओं में विभक्त किया जा सकता है। इनका विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

शास्त्रीय संस्कृत नाट्यकला (Classical Sanskrit Theatre)

- इस नाट्यकला का मुख्य प्रयोजन पाठक या दर्शक का मनोरंजन करना होता था। विदित है कि इन नाटकों को काव्य या वर्णात्मक गद्य के रूप में संकलित किया गया है।
- भरतमुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र की प्रथम पुस्तक 'नाट्यशाला' में नृत्य संबंधी मुद्राओं और मंच संचालन के सभी नियम वर्णित हैं।
- विशाखदत्त कृत 'मुद्राराक्षस' एक प्रतिष्ठित राजनीतिक नाटक है, जिसमें राजा चंद्रगुप्त मौर्य के जीवन से संबंधित घटनाओं का उल्लेख है। इसकी एक अन्य प्रसिद्ध रचना 'देवीचंद्रगुप्तम्' से गुप्तवंशीय शासक रामगुप्त के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।
- महान नाटककार कालिदास ने तीन नाटकों 'मालविकाग्निमित्रम्', 'विक्रमोर्वशीयम्' तथा 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' की रचना की है। 'मालविकाग्निमित्रम्' से शुंगकालीन राजनीतिक परिस्थितियों की जानकारी मिलती है। इस नाटक में शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र और मालविका की प्रेम कथा का वर्णन है।
- 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' कालिदास की सर्वोत्कृष्ट रचना है जिसमें प्रेम रस की अभिव्यक्ति अद्वितीय है। इसके अतिरिक्त, 'विक्रमोर्वशीयम्' में पुरुरवा और उर्वशी प्रणय कथा का वर्णन है।
- 'मृच्छ्कटिकम्' एक असाधारण नाटक है जिसकी रचना शूद्रक ने की थी। इस नाटक के पात्र समाज के सभी वर्गों से लिये गए है। इस नाटक में ब्राह्मण चारुदत्त और गणिका वसंतसेना की प्रेम कथा का वर्णन है।

भारत की लोक नाट्यकलाएँ	
लोकनाट्य एवं संबंधित राज्य	**प्रमुख विशेषताएँ**
अंकिया नाट (असम)	• इस लोकनाट्य की शुरूआत सोलहवीं सदी में वैष्णव संत शंकरदेव ने की थी। • इसमें कृष्ण की लीलाओं का प्रदर्शन होता है। • इसका प्रस्तुतीकरण 'ओपेरा शैली' में होता है। • विशेष भावों की अभिव्यक्ति हेतु 'रंग-बिरंगे मुखौटों' का प्रयोग इस नाट्य की प्रमुख विशेषता है।
रामलीला (उत्तर प्रदेश)	• इस लोकनाट्य का मंचन मुख्यत: पूरे उत्तर भारत में होता है। • इसमें रामायण का मंचन होता है। • इसका प्रदर्शन दशहरा के पहले गीतों, नृत्यों, संवादों के माध्यम से किया जाता है। • इसे मुख्यत: पुरुष कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है जो स्त्री पात्रों की भी भूमिका निभाते हैं। • यह नाट्य यूनेस्को की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' की सूची में शामिल है।
ओजा-पल्लि (असम)	• यह नाट्यकला मनसा देवी या नाग देवी के पर्व से संबंधित है। • इसमें 'ओजा' मुख्य कथावाचक, जबकि 'पल्लि' सह कथावाचक होता है। • इसमें कथा वाचन की एक लंबी प्रक्रिया होती है।
रासलीला (उत्तर प्रदेश)	• राज्य के ब्रज क्षेत्र में यह नाट्यकला अत्यधिक लोकप्रिय है। • इसमें कृष्ण और राधा की प्रेम लीलाओं को नाटक के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। • इसमें तत्सम के स्थान पर तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक होता है।
रम्मन (उत्तराखंड)	• यह नाटक नृत्य, गीत और रामायण की कथाओं के संवाद पर आधारित होता है। • इसमें स्थानीय देवता 'भुमियाली' की पूजा की जाती है। • इसका मंचन करते समय भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार वाली मुखाकृति का मुखौटा पहना जाता है। • इसे 'भंडारी जनजाति' द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। • यह नाट्यकला यूनेस्को की 'अमूर्त सांस्कृतिक विरासत' की सूची में शामिल है।

लोकनाट्य एवं संबंधित राज्य	प्रमुख विशेषताएँ
लावणी (महाराष्ट्र) 	• लावण्य का शाब्दिक अर्थ 'सुंदरता' होता है। • यह लोकनाट्य तमाशा का अभिन्न अंग है। साथ ही, इसे प्रसिद्ध लोकनृत्य के रूप में भी जाना जाता है। • संगीत, कविता, नृत्य और नाट्य सभी मिलकर लावणी बनाते हैं। • लावणी दो प्रकार की होती है– आध्यात्मिक गुणों से युक्त निर्गुणी लावणी और शृंगार रस से युक्त शृंगारी लावणी।
थेय्यम (केरल) 	• यह एक खुला नाट्य मंच होता है। • देवताओं को प्रसन्न करने तथा मृत पूर्वजों की आत्माओं के सम्मान में स्थानीय मंदिर प्रांगण में इसे प्रदर्शित किया जाता है। • इसकी विषयवस्तु वैष्णववाद, शैववाद और शक्तिवाद से संबंधित है। • इसमें अभिनय करने वाले कलाकारों की पोशाकों में अलंकृत पगड़ी और रंग-बिरंगे परिधान शामिल हैं।
ताल-मड्डाले (कर्नाटक) 	• यहाँ ताल से तात्पर्य 'झाँझ' एवं मड्डाले से तात्पर्य 'ढोल' से है। • यह लोकनाट्य यक्षगान का पूर्वानुगामी माना जाता है। • इसमें नृत्य और विशेष वेशभूषा के बिना ही रामायण, महाभारत या पुराण की कथाओं का वाचन किया जाता है।
कृष्णाट्टम (केरल) 	• इस नाट्यकला का विकास सत्रहवीं सदी के मध्य में कालीकट में हुआ। • इसमें भगवान कृष्ण की जीवन लीलाओं की प्रस्तुति की जाती है। • इसके अंतर्गत आठ नाटकों को शामिल किया जाता है जो क्रमानुसार आठ दिनों तक प्रस्तुत किये जाते हैं।
कुरुवंजी (तमिलनाडु) 	• कुरुवंजी का शाब्दिक अर्थ 'भविष्यवक्ता' होता है जो नाटक की नायिका के भाग्य की भविष्यवाणी करता है। • इसकी विषयवस्तु प्रेमयुक्त नायिका के जीवन पर आधारित है। • इसमें तमिल कविता और गीत को प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही, भरतनाट्यम नृत्य भी किया जाता है।

इकाई

9

भारतीय पुतली कला
(Indian Puppet Art)

- भूमिका
- भारत में पुतली कला
  - ➤ सूत्र या धागा पुतली कला
  - ➤ छाया पुतली कला
  - ➤ दस्ताना पुतली कला
  - ➤ छड़ पुतली कला
- आधुनिक पुतली कला

भूमिका (Introduction)

- प्राचीनकाल से पारंपरिक मनोरंजन में पुतली कला का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। पुतली शब्द लैटिन भाषा के 'प्यूपा' से लिया गया है जिसका अर्थ 'पुतली' होता है। विदित है कि संस्कृत शब्दावली में पुतलीका तथा पुट्टीका का अर्थ 'छोटे पुत्रों' से है।
- पुतली कला का भारत में विकास 500 ईसा पूर्व से माना जाता है। इस कला का प्राचीनतम लिखित साक्ष्य पहली एवं दूसरी सदी ईसा पूर्व रचित तमिल ग्रंथ 'शिल्लपादिकारम्' में पाया जाता है।
- दूसरी सदी ईसा पूर्व से दूसरी सदी ईसा के दौरान रचित ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में प्रत्यक्ष रूप से पुतली कला का उल्लेख नहीं है, किंतु इसमें नाट्य के निर्माता-सह-निर्देशक को 'सूत्रधार' के रूप में अवश्य वर्णित किया गया है। यहाँ सूत्रधार का अर्थ धागों से लगाया जाता है।
- भारत को पुतलियों का घर कहा जाता है। यहाँ लगभग सभी प्रकार की पुतलियाँ पाई जाती हैं। देश के विभिन्न प्रांतों को पुतलियों की अपनी विशेष पहचान के लिये जाना जाता है।
- इन पुतलियों में चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत, नृत्य और नाटक की क्षेत्रीय शैलियों की रचनात्मक अनुभूतियों का समावेश होता है।
- पारंपरिक नाट्यकला के समान पुतली कला की विषयवस्तु भी महाकाव्यों, पौराणिक साहित्यों, दंतकथाओं और किंवदंतियों पर आधारित है।
- इस कला को प्रस्तुत करने के लिये एक-साथ अनेक लोगों के सृजनात्मक प्रयासों की आवश्यकता पड़ती है।
- आधुनिक समय में विश्व के शिक्षाविदों ने पुतलियों के महत्त्व को समझा है। अनेक व्यक्तियों और संस्थाओं द्वारा शैक्षणिक संकल्पनाओं के संप्रेषण में पुतलियों का प्रयोग किया जा रहा है।

भारत में पुतली कला (Puppet Art in India)

सूत्र या धागा पुतली कला (String or Thread Puppet Art)

- भारत में धागा पुतलियों की परंपरा अत्यंत प्राचीन एवं समृद्ध है।
- ये लकड़ी को तराशकर बनाई गई 8 से 9 इंच की लघु मूर्तियाँ होती हैं।

- इन्हें रंगीन वस्त्रों से ढका जाता है। साथ ही, इन्हें आकर्षक बनाने के लिये आभूषणों और अन्य सामग्रियों का भी प्रयोग किया जाता है।
- पुतलियों को गतिशीलता प्रदान करने के लिये इनके हाथ, सिर और पीठ में सुराख कर इन्हें धागे से जोड़ दिया जाता है। तत्पश्चात् इन्हें धागों द्वारा संचालित किया जाता है।
- इस प्रकार, अनेक जोड़युक्त अंग तथा धागों द्वारा संचालन इन्हें अत्यंत लचीलापन प्रदान करते हैं।
- राजस्थान, ओडिशा, कर्नाटक और तमिलनाडु में यह पुतली कला मुख्य रूप से पल्लवित एवं विकसित हुई। जहाँ इन्हें क्रमशः कठपुतली, कुनढ़ेई, गोंबेयेट्टा और बोम्मालट्टा के नाम से जाना जाता है।

सूत्र या धागा पुतली कला

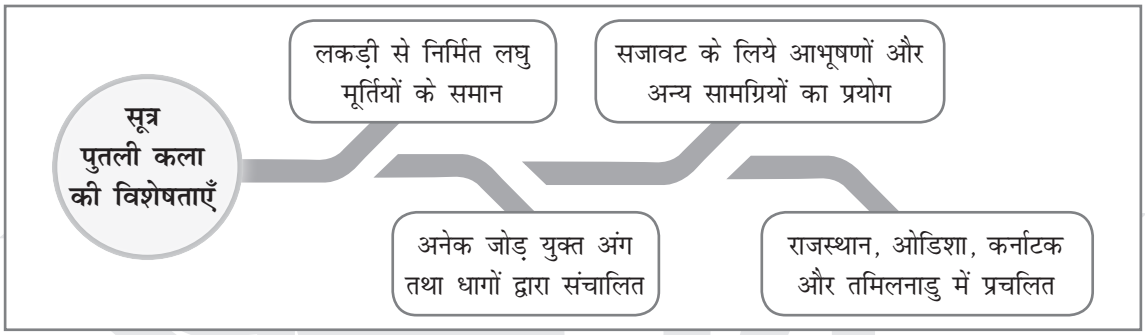

छाया पुतली कला (Shadow Puppet Art)

- भारत के विभिन्न प्रांतों में छाया पुतलियों की अनेक शैलियाँ प्रचलित हैं।
- ये पुतलियाँ चपटी होती हैं और प्रायः चमड़े से बनाई जाती हैं।
- इन्हें पर्दे के पीछे से प्रदीप्त किया जाता है, अर्थात् पुतली का संचालन प्रकाश स्रोत तथा पर्दे के मध्य से किया जाता है जिससे पर्दे पर छाया दिखाई देती है। इसलिये, यह 'छाया पुतली कला' कहलाती है।
- दर्शक पर्दे के दूसरी तरफ से इन छायाकृतियों को देखते हैं। ये छायाकृतियाँ रंगीन भी हो सकती हैं।
- भारत में छाया पुतली की यह परंपरा ओडिशा, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में मुख्य रूप से प्रचलित है।
- इस कला के कुछ प्रमुख उदाहरण तोगलु गोंबेयेट्टा, रावण छाया, थोलू बोम्मालट्टा आदि है।

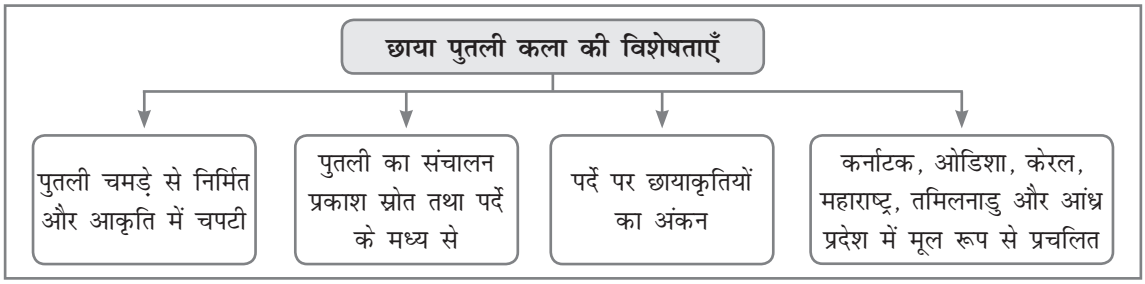

सूत्र पुतली कला		
पुतली कला	**संबंधित राज्य**	**महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ**
कुन्धेई	**ओडिशा** 	• यह पुतली हल्की लकड़ी से बनी होती है। • यह पुछल्ला लहँगा पहनती है तथा इसके पैर नहीं होते। • इसमें अनेक जोड़ होते हैं जिससे इसका संचालन सरल होता है। • पुतली संचालक एक लकड़ी के तिकोने फ्रेम को पकड़े रहता है जिस पर संचालन करने के लिये धागे बँधे होते हैं। • इस पुतली की वेशभूषा परंपरागत जात्रा नाटक के कलाकारों की भाँति होती है। • इस कला पर ओडिसी नृत्य का गहरा प्रभाव भी दिखता है।
गोंबेयेट्टा	**कर्नाटक** 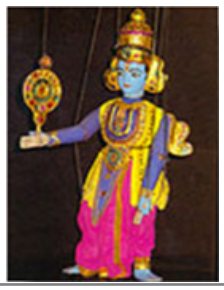	• गोंबेयेट्टा पुतली की आकृति अत्यंत सुसज्जित होती है और पैर, कंधे, कोहनी, कूल्हे और घुटनों में जोड़ होते हैं। • फ्रेम से बँधे पाँच से सात धागों के माध्यम से इसका संचालन होता है। • इस कला का संबंध कर्नाटक के लोकनृत्य यक्षगान से है जिसमें इसके प्रसंगों को प्रदर्शित किया जाता है। • इस कला में लोक संगीत तथा शास्त्रीय संगीत का समन्वित रूप प्रयुक्त होता है।
कठपुतली	**राजस्थान** 	• राजस्थान की परंपरागत पुतली कला को कठपुतली कला कहते हैं। • काठ (लकड़ी) के एक टुकड़े से तराशकर बनाई गई इस पुतली की वेशभूषा मध्यकालीन राजस्थानी शैली में होती है। ये रंग-बिरंगे वस्त्र अत्यंत आकर्षक लगते हैं। • यह पुतली लंबा पुछल्ला लहँगा पहनती है तथा इसके पैरों में जोड़ नहीं होते। • इसका मंचन लोक नाट्य और लोक संगीत के साथ किया जाता है। • पुतली संचालक अपनी उँगलियों से बँधे दो या पाँच धागों से इसका संचालन करता है।
बोम्मालट्टा	**तमिलनाडु** 	• इस पुतली कला में छड़ और धागा पुतली की तकनीक का एक-साथ प्रयोग होता है। • यह पुतली आकार में बड़ी और भारी होती है। इसका आकार लगभग साढ़े चार फीट और वजन लगभग दस किलो तक होता है। • यह लकड़ी से निर्मित होती है और इसे संचालित करने वाला धागा एक लोहे की रिंग से बंधा रहता है जिसे पुतली संचालक मुकुट की तरह अपने सिर पर धारण किये रहता है।

इकाई

10

भारत की परंपरागत युद्धकलाएँ
(Traditional Martial Arts in India)

- परिचय
- कलारिपयाट्टू
- सिलांबम
- कुट्टूवरिसाई
- थांग-टा
- सरित-सरक
- मर्दानी खेल
- लाठी खेल
- थोडा
- इंबुआन कुश्ती
- मुष्टि युद्ध
- काठी सामू
- गतका
- चेइबी गद-गा
- परी-खंडा
- सकय
- पाईका अखाड़ा

परिचय (Introduction)

- मार्शल आर्ट का शाब्दिक अर्थ 'युद्ध छेड़ने से संबद्ध कला' है। इस कला का उद्देश्य हमला करने के स्थान पर स्वयं का बचाव करना होता है।
- यह समर्पण, साहस और आंतरिक शांति के साथ प्रदर्शित की जाने वाली एक कला है। यह एक व्यक्ति की ताकत से अधिक अनुशासन और संतुलन को प्रस्तुत करता है।
- इन कलाओं में सिद्धहस्त और पारंगत होने के लिये नियमित अभ्यास और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। इसे विज्ञान और कला दोनों माना जाता है। इसे निश्चित नियमों के कारण विज्ञान तथा कौशल की अभिव्यक्ति के कारण कला माना जाता है।
- प्राचीन काल से भारत में प्रचलित इन कलाओं का प्रयोग युद्धों के दौरान किया जाता था जिनका वर्तमान में उपयोग शारीरिक स्वास्थ्य लाभ, आत्मरक्षा तथा धार्मिक संस्कार के रूप में होने लगा।
- भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति के तहत देश के विभिन्न हिस्सों में विविध प्रकार की यद्ध कलाओं का अभ्यास किया जाता है। पारंपरिक कुश्ती सबसे लोकप्रिय और सर्वव्यापी मार्शल आर्ट है। इसके अतिरिक्त, देश के विभिन्न हिस्सों में विभिन्न प्रकार की युद्ध कलाएँ प्रचलित है।
- ब्रिटिश काल में इन युद्ध कलाओं में से कुछ प्रमुख रूपों पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिसमें कलारिपयाट्टू और सिलांबम प्रमुख है।
- स्वतंत्रता के पश्चात् देश के विभिन्न भागों में प्रचलित इन युद्ध कलाओं को पुनर्जीवित करने तथा संरक्षण प्रदान करने का कार्य किया जा रहा है।
- यद्यपि, चीनी और जापानी मार्शल आर्ट विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। वहीं दूसरी तरफ भारतीय मार्शल आर्ट धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रहे हैं, हालाँकि इन्हें अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। देश में प्रचलित विभिन्न युद्ध कलाओं का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

- इसका अभ्यास तीन तरीकों से किया जाता है–
  - ➤ तांत्रिक परंपराओं पर आधारित विधि विधान से संबंधित
  - ➤ भाला और तलवार के साथ मनमोहक प्रदर्शन
  - ➤ युद्ध की वास्तविक तकनीकों का प्रदर्शन

सरित-सरक (Sarit-Sarak)

- यह थांग-टा युद्ध कला का एक अन्य रूप है जिसे मणिपुर में खेला जाता है।
- यह एक नि:शस्त्र मार्शल आर्ट है जिसमें निहत्थे प्रतिद्वंदी प्रतियोगिता में शामिल होते हैं।
- इस युद्धकला में हाथापाई के रूप में युद्ध का प्रदर्शन किया जाता है।

मर्दानी खेल (Mardanikhel)

- यह एक हथियार आधारित मार्शल आर्ट है।
- यह महाराष्ट्र में खेला जाता है, इसका विकास मराठा शासन के दौरान पंद्रहवीं-सोलहवीं सदी में हुआ था।
- इस युद्ध कला में तलवार, ढाल, खंजर, भाला, बाँस की छड़ी का उपयोग किया जाता है।

लाठी खेल (LathiKhel)

- लाठी शब्द का तात्पर्य 'बाँस की छड़ी' है।
- यह पश्चिम बंगाल का एक प्राचीन सशस्त्र मार्शल आर्ट है।
- इस युद्ध कला को 'छड़ी कला' भी कहा जाता है।
- भारतीय पुलिस लाठी का प्रयोग एक शक्तिशाली हथियार के रूप में करते है।

थोडा (Thoda)

- इस मार्शल आर्ट का संबंध हिमाचल प्रदेश से हैं।
- इस कला को सांस्कृतिक और खेल गतिविधि के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।
- इसे बैसाखी के दिन आयोजित किया जाता है।
- इस खेल के लिए आवश्यक उपकरण धनुष और तीर हैं।
- इस खेल में दो समूह होते हैं। इन्हें साठी और पाशी कहा जाता है।
- दोनों समूहों में अलग-अलग लगभग 500 लोग सम्मिलित होते हैं।

इकाई

11

भारतीय हस्तशिल्प
(Indian Handicrafts)

- परिचय
- काँच निर्मित हस्तशिल्प
- हाथीदाँत पर हस्तशिल्प
- टेराकोटा हस्तशिल्प
- धातु हस्तशिल्प
- कपड़े पर हस्तशिल्प
- कढ़ाई कला
- बुनाई कला
- भूमि पर निर्मित कलाएँ

परिचय (Introduction)

- हस्तशिल्प से अभिप्राय हस्त कौशल से निर्मित किये गए रचनात्मक उत्पादों से हैं जिनके लिये किसी आधुनिक मशीनरी और उपकरणों की सहायता नहीं ली जाती है।
- भारत की भव्य सांस्कृतिक विरासत और सदियों से क्रमिक रूप से विकसित हो रही परंपराओं की झलक देश भर में निर्मित हस्तशिल्पों के अंतर्गत दिखाई देती है।
- विदित है कि प्राचीन काल में इन हस्तशिल्प उत्पादों को रेशम मार्ग से यूरोप, अफ्रीका और पश्चिम एशिया के देशों को निर्यात किया जाता था।
- भारतीय हस्तशिल्प को मुख्य रूप से तीन श्रेणियों– लोक शिल्प, आध्यात्मिक शिल्प, वाणिज्यिक शिल्प में विभक्त किया जा सकता है।
- भारत के कुछ प्रमुख हस्तशिल्प उत्पाद इस प्रकार है–

काँच निर्मित हस्तशिल्प (Glass Handicrafts)

- काँच से निर्मित मनकों के प्राचीनतम साक्ष्य गंगा घाटी के चित्रित धूसर मृद्भांड संस्कृति (1000 ई.पू.) से प्राप्त हुए है।
- दक्षिण भारत के ताम्रपाषाणिक स्थल मॉस्की से भी काँच के पुरातात्त्विक साक्ष्य मिले हैं।
- मध्यकाल में मुगल शासकों द्वारा काँच का उपयोग विभिन्न भवनों के अलंकरण में किया गया। इसके अलावा, काँच से निर्मित कलाकृतियों में हुक्का, इत्रदान आदि प्रमुख रूप से शामिल हैं।

काँच निर्मित हस्तकला

- वर्तमान में, हैदराबाद शहर अपनी उत्तम किस्म की चूड़ियों के लिये प्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश के फिरोज़ाबाद शहर को काँच से बनी चूड़ियों के अतिरिक्त झूमर और अन्य सजावटी सामान के लिये भी जाना जाता है।
- इसके अलावा, उत्तर प्रदेश के सहारनपुर को 'पंचकोरा या काँच के खिलौनों' और वाराणसी को आलंकारिक काँच को मनकों (टिकुली) के लिये जाना जाता है।

- राजस्थान की 'मोरारी हस्तशिल्प' की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें धातु पर नक्काशी करने के लिये धातु का प्रयोग किया जाता है। इस हस्तशिल्प में अधिकांशत: नक्काशी या उभारदार तकनीक के माध्यम से डिज़ाइन बनाए जाते हैं।
- धातु शिल्प के अंतर्गत राजस्थान की 'तारकशी कला' महत्त्वपूर्ण है। इस कला में कारीगर लकड़ी के ब्लॉक पर कागज के एक टुकड़े से ज्यामितीय या पुष्प रूप में डिज़ाइन निर्मित करते हैं जिसके पश्चात् उस पर गहरी नक्काशी की जाती है। इस नक्काशी में पीतल, ताँबे या चाँदी के महीन तार को जड़ने का कार्य किया जाता है जिसे 'तारकशी कहा जाता है।
- राजस्थान के जयपुर को 'मीनाकारी' के कार्य के लिये जाना जाता है। इस कला में विभिन्न प्रकार के धातुओं जैसे सोना, चाँदी आदि पर पक्षियों, फूलों और पत्तियों का अंकन जीवंत रंगों के साथ किया जाता है।
- 'थेवा', गहनों को बनाने की एक विशेष कला है जो राजस्थान के प्रतापगढ़ में प्रचलित है। इसमें पिघले हुए काँच पर स्वर्ण मीनाकारी का कार्य किया जाता है।

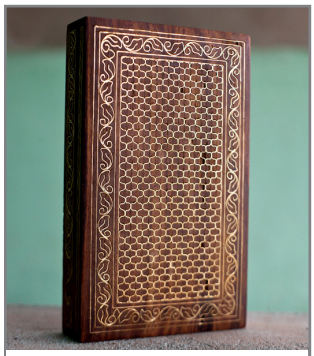

तारकशी कला

- मीनाकारी की एक अन्य प्रसिद्ध कला 'कोफ्तगिरी' है जो राजस्थान में मुख्य रूप से मेवाड़ क्षेत्र में प्रचलित है। इस हस्तकला में हथियारों को सजाने के लिये सोने या चाँदी के तारों से जड़ाई का कार्य किया जाता है।

मीनाकारी कला

थेवा कला

कोफ्तगिरी कला

- इसके अलावा, राजस्थान के अलवर को 'तहनिशा' नामक मीनाकारी के लिये जाना जाता है। इसमें डिज़ाइन को गहराई तक खोदकर उसमें सोने या चाँदी के तार को भर दिया जाता है। साथ ही, राजस्थान के जयपुर शहर की प्रसिद्ध 'कुंदन कला' में स्वर्ण आभूषणों पर रत्न जड़ाई का कार्य किया जाता है।
- उत्तर प्रदेश में इटावा, सीतापुर, वाराणसी, मुरादाबाद आदि काँस्य कला के मुख्य केंद्र हैं जहाँ फूल के बर्तन, देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, ताम्रपात्र, कंचन थाल आदि वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। इसके अलावा, तमिलनाडु भी काँस्य मूर्तियों के लिये प्रसिद्ध है।

बीदरी कला

बीदरी कला

मुकेशा (Mukaisha)

- यह कढ़ाई मुख्यत: उत्तर प्रदेश के लखनऊ में प्रचलित है।
- इसमें वस्त्र पर कढ़ाई करने के लिये धातु के महीन धागों का प्रयोग किया जाता है।

मुकेशा कढ़ाई

खट्वा अप्लीक (Khatwa Aplik)

- ओडिशा की पिपली कढ़ाई को बिहार में स्थानीय रूप में खट्वा अप्लीक कढ़ाई के नाम से जाना जाता है।
- इस कढ़ाई में डिज़ाइन को कपड़े के एक पूरे टुकड़े से काटकर उसे दूसरे कपड़े पर सिल दिया जाता है।

खट्वा अप्लीक कढ़ाई

सोज़नी (Sozni)

- यह कढ़ाई कला जम्मू-कश्मीर में प्रचलित है।
- इस कढ़ाई में कपड़े के दोनों तरफ अलग-अलग रंगों से लेकिन समान डिज़ाइन पर कार्य किया जाता है।
- दोनों तरफ से उपयोग में लाए जाने के कारण इस कढ़ाई में निर्मित शॉल को 'दोरुखा शॉल' कहते है।

सोज़नी कढ़ाई

सुजनी (Sujani)

- यह कढ़ाई कला मुख्यत: बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर ज़िले के भूसरा गाँव में प्रचलित है।
- सामान्यत: इसमें कढ़ाई करने वाला आधार वस्त्र लाल या श्वेत होता है।
- इस कला में रूपांकनों की रूपरेखा को मोटा बनाया जाता है।

सुजनी कढ़ाई

गारा (Gara)

- यह कढ़ाई कला गुजरात राज्य में प्रचलित है।
- यह एक आयातित कढ़ाई कला है जिसे पारसियों द्वारा चीन से भारत लाया गया था।
- इसमें कढ़ाई के डिज़ाइन को पहले कागज़ पर फिर उसे वस्त्र (साड़ी) पर उकेरा जाता है।

गारा कढ़ाई

किमखाब (Kimkhaab)

- यह कढ़ाई कला उत्तर प्रदेश के वाराणसी में प्रचलित है।
- इसमें रेशम और सोने के धागे (कलाबट्टू) से कढ़ाई की जाती है।

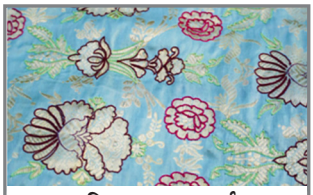

किमखाब कढ़ाई

कपडागांडा (Kapdaganda)

- यह कढ़ाई कला ओडिशा राज्य में नियमागिरि की डोंगरिया कोंध जनजाति की समृद्ध विरासत है।

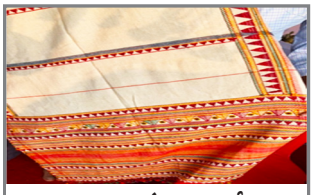

कपडागांडा कढ़ाई

- लाल, हरे और पीले रंग के धागों का प्रयोग करके सूई द्वारा कपड़े पर कशीदाकारी की जाती है।
- इस कढ़ाई के डिज़ाइन में ज्यामितीय पैटर्न को शामिल किया जाता है।

बुनाई कला (Weaving Art in India)

भारत में बुनाई कला एवं संबंधित राज्य	प्रमुख विशेषताएँ
पट (छत्तीसगढ़) 	• यह छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में प्रचलित है। • इस बुनाई कला से बनी साड़ियों का प्रयोग आदिवासी महिलाओं द्वारा किया जाता है।
मशरू (गुजरात) 	• इस कपड़े का निर्माण गुजरात में मुख्य रूप से पाटन और मांडवी में किया जाता है। • यह रेशम और सूती वस्त्रों का मिश्रित रूप है। • इस वस्त्र को मुख्यत: मुसलमानों द्वारा पहना जाता है।
बोहरा टोपी (गुजरात) 	• यह गुजरात राज्य में बोहरा समुदाय द्वारा पहनी जाने वाली एक विशेष टोपी है जिसे महिलाओं द्वारा विभिन्न डिज़ाइनों के साथ बुना जाता है। • इस टोपी में सफेद एवं सुनहरे धागे का प्रयोग किया जाता है। • इसमें ज्यामितीय और पुष्पीय दोनों प्रकार के पैटर्न बनाए जाते हैं।
पटकू (गुजरात) 	• इस कपड़े में धारीदार किनारों की डिज़ाइन बनाई जाती है। • रंगाई हेतु प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है।
सुजुनी (गुजरात) 	• ऊन, रेयॉन और कपास के मिश्रण के साथ इस कपड़े को बुना जाता है। • यह बुनाई मैट के समान प्रतीत होती है।
कच्छी (गुजरात) 	• यह बुनाई कला गुजरात के कच्छ क्षेत्र में प्रचलित है। • यह कला रबारी समुदाय द्वारा संरक्षित है। • इसमें प्राकृतिक और रासायनिक रंगों का उपयोग किया जाता है।

इकाई

12

भारतीय भाषा एवं साहित्य
(Indian Language and Literature)

- परिचय
- शास्त्रीय भाषाएँ
- भारत की प्राचीन लिपियाँ

भारतीय साहित्य

प्राचीन भारतीय साहित्य

- वैदिक साहित्य
  - ➤ वेद
  - ➤ ब्राह्मण
  - ➤ आरण्यक
  - ➤ उपनिषद्
  - ➤ वेदांग
  - ➤ सूत्र साहित्य
  - ➤ पुराण एवं उपपुराण
  - ➤ धर्मशास्त्र
- महाकाव्य
  - ➤ रामायण
  - ➤ महाभारत
- शास्त्रीय संस्कृत साहित्य
- पालि और प्राकृत में साहित्य
- द्रविड़ साहित्य
  - ➤ तमिल साहित्य
  - ➤ तेलगू साहित्य
  - ➤ मलयालम साहित्य
  - ➤ कन्नड़ साहित्य

मध्यकालीन साहित्य

- फारसी साहित्य
- उर्दू साहित्य
- हिंदी साहित्य
- बांग्ला साहित्य
- मराठी साहित्य
- पंजाबी साहित्य

आधुनिक साहित्य

- हिंदी साहित्य
- बंगाली साहित्य

परिचय (Introduction)

- भाषा मनुष्यों के बीच आपसी संप्रेषण का माध्यम है अर्थात् यह वाणी के माध्यम से संचार करने की एक प्रणाली है। यह ध्वनियों का ऐसा संग्रह होता है, जिसमें मनुष्यों का एक समूह एकसमान अर्थ ग्रहण करता है।
- मनुष्य ने सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ ही अपनी भाषा का विकास किया, इसी के आधार पर लेखन शैली का भी सृजन हुआ है। लेखन शैली का आरंभ होने से संस्कृति, जीवनशैली तथा तत्कालीन समाज की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति का वर्णन करने के लिये लेखन कार्य किया जाने लगा।
- सीमित क्षेत्र में स्थानीय व्यवहार में प्रयोग होने वाली भाषा का वह अल्पविकसित रूप जिसका कोई लिखित रूप अथवा साहित्य नहीं होता, बोली कही जाती है। बोली भाषा का प्रारंभिक रूप होती है। एक ही भाषा अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार से बोली जा सकती है। उदाहरणस्वरूप- हिंदी भाषा उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, हरियाणा आदि क्षेत्रों में विभिन्न स्वरूपों में बोली जाती है।

शास्त्रीय भाषाएँ (Classical Language)

- भारत सरकार ने वर्ष 2004 में किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान करने के लिये कुछ निश्चित मानदंडों का निर्धारण किया, जो इस प्रकार हैं–
  - ➤ भाषा का लिखित इतिहास 1500-2000 वर्षों से अधिक पुराना होना चाहिये।
  - ➤ भाषा की मौलिक साहित्यिक परंपरा होनी चाहिये।
  - ➤ भाषा में रचित साहित्य/ग्रंथ को किसी समूह विशेष की पीढ़ियों द्वारा अमूल्य विरासत समझा जाना चाहिये।

- खरोष्ठी लिपि का लेखन अधिकतर दाएँ से बाएँ होता है किंतु, कुछ अभिलेखों में यह बाएँ से दाएँ भी लिखी गई है। इस लिपि का कूटवाचन जेम्स प्रिंसेप द्वारा किया गया था।
- मौर्य शासक अशोक द्वारा स्थापित मानसेहरा और शहबाजगढ़ी अभिलेख को इस लिपि का प्राचीनतम उदाहरण माना जाता है। इसके अलावा, यूनानी शासकों द्वारा निर्मित सिक्कों पर भी इस लिपि का उपयोग किया गया।

गुप्त लिपि (Gupta Script)

गुप्त लिपि

- यह लिपि गुप्त साम्राज्य से संबंधित है। इसका उपयोग संस्कृत लेखन के लिये किया जाता था।
- इस लिपि की उत्पत्ति ब्राह्मी से हुई है और इससे नागरी, शारदा और सिद्धम लिपियाँ उत्पन्न हुई हैं। इन लिपियों से कालांतर में अनेक महत्त्वपूर्ण लिपियाँ, जैसे- देवनागरी, गुरुमुखी, बांग्ला, असमिया और तिब्बती की उत्पत्ति हुई।

वट्टेलुत्तु लिपि (Vatteluttu Script)

वट्टेलुत्तु लिपि

- वट्टेलुत्तु लिपि अर्थात गोल अक्षर भी एक अबुगिडा लेखन प्रणाली है। इसका आरंभिक प्रयोग दक्षिण भारत और श्रीलंका के तमिलों द्वारा किया गया। इसका विकास तमिल ब्राह्मी से हुआ है।
- इस लिपि की वर्णमाला के साक्ष्य छठी से चौदहवीं सदी के बीच केरल और तमिलनाडु में मिलते हैं।

कदंब लिपि (Kadamba Script)

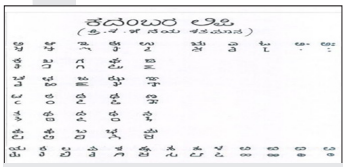

कदंब लिपि

- इसकी उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से हुई है। इसका प्रयोग कन्नड़ भाषा लिखने के लिये किया जाता है।
- चौथी से छठी सदी में कदंब राजवंश के शासन में विकसित होने के कारण इसका नाम कदंब लिपि पड़ा जो आगे चलकर कन्नड़-तेलुगू लिपि बन गई।

शारदा लिपि (Sharada Script)

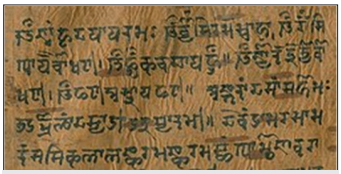

शारदा लिपि

- शारदा लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। इसका लेखन अबुगिडा प्रणाली में हुआ है।
- इस लिपि का विकास आठवीं सदी में हुआ। माना जाता है कि इस लिपि का प्रयोग संस्कृत एवं कश्मीरी भाषा के लिये किया गया। वर्तमान में इस लिपि का उपयोग कश्मीरी पंडितों द्वारा केवल आनुष्ठानिक प्रयोजनों के लिये किया जाता है। अब इसका स्थान नागरी, टाकरी और गुरुमुखी ने ले लिया है।

ग्रंथ लिपि (Grantha Script)

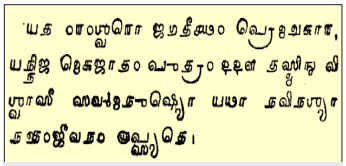

ग्रंथ लिपि

- यह दक्षिण भारत की एक प्राचीन लिपि है। इसका व्यापक रूप से उपयोग छठी से बीसवीं सदी के बीच तमिलनाडु और केरल में संस्कृत और शास्त्रीय भाषा मणिप्रवलम् के लेखन के लिये किया जाता था। इसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है।

- वेद भारत के सर्वाधिक प्राचीन धार्मिक साहित्य हैं जिनका संकलनकर्ता महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यास को माना जाता है। वेदों का ऐतिहासिक महत्त्व वैदिक युग की सांस्कृतिक स्थिति के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के संदर्भ में है।

ऋग्वेद	यजुर्वेद	सामवेद	अथर्ववेद
सांसारिक समृद्धि और प्राकृतिक सुंदरता पर ध्यान केंद्रित	यज्ञ संबंधी कर्मकांडों और मंत्रों पर ध्यान केंद्रित	मंत्रों का संगीतमय उच्चारण करने की विधि का वर्णन	मनुष्य के दैनिक जीवन से संबंधित होने के साथ ही मानव समाज की शांति और समृद्धि पर ध्यान केंद्रित
सर्वाधिक पुराना वेद जिसमें 10 मंडल और 1,028 संस्कृत सूक्त	गद्य और पद्य में संकलित	भारतीय संगीत के जनक के रूप में चर्चित	जादू-टोने से संबंधित चर्चा

- 'वेद' शब्द का आशय ज्ञान से है जिसका संबंध पृथ्वी और इससे परे उपस्थित समस्त जीवन का संचालन करने हेतु मनुष्यों को ज्ञान उपलब्ध कराने के विषय से है। वेद की भाषा प्रतीकात्मक एवं मिथकों से युक्त है तथा शैली काव्यात्मक है।
- प्राचीन काल की रचनाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय धार्मिक साहित्यिक रचनाएँ वेद हैं जो कि धार्मिक अनुष्ठानों के साथ ही दैनिक जीवन में भी उपयोग में आने वाले पवित्र ग्रंथ हैं। स्पष्ट है कि वेद मनुष्य का मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से संकलित किये गए हैं।
- वेदों के चार प्रकार– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं जिन्हें संयुक्त रूप से 'संहिता' कहा जाता है। आगामी समय में ब्राह्मणों, आरण्यकों और उपनिषदों की भी रचना की गई। इन्हें सम्मिलित रूप से 'वैदिक साहित्य' कहा जाता है।
- ध्यातव्य है कि उपवेद को वैदिक साहित्य का अंग नहीं माना जाता है। उपवेद अत्यंत परवर्तीकाल से संबंधित होने के कारण वैदिकोत्तर साहित्य के अंतर्गत रखे जाते हैं।
- ऋग्वेद में मुख्य रूप से प्रार्थनाएँ सम्मिलित होती हैं जबकि उत्तरकालीन वैदिक ग्रंथों में प्रार्थनाओं के साथ ही कर्मकांड, अनुष्ठान, जादू-टोना और पौराणिक कहानियाँ आदि भी सम्मिलित होते हैं।
- प्रथम तीन वेदों– ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद को 'वेदत्रयी' कहा जाता है। अथर्ववेद को इसमें सम्मिलित नहीं किया जाता क्योंकि इसमें यज्ञ के स्थान पर लौकिक विषयों का वर्णन मिलता है।
- वेदों के अंतर्गत ऋग्वेद का संकलन लिखित रूप से 1500 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व के मध्य किया गया जबकि वेद के अन्य प्रकारों– ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् जैसे ग्रंथों की रचना का काल ईसा पूर्व 1000-500 माना जाता है। वेदों के निम्नलिखित चार प्रकार हैं–

ऋग्वेद (Rig Veda)

- चारों वेदों में ऋग्वेद सर्वाधिक पुराना वेद है जिसकी रचना 1500 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व के मध्य की गई थी। इसमें कुल 10 मंडल और 1,028 संस्कृत सूक्त हैं।

इकाई

13

मेले एवं त्योहार
(Fairs & Festivals)

- परिचय
- राष्ट्रीय पर्व
- धार्मिक त्योहार
- लोक पर्व
  - ➤ उत्तर भारत के पर्व
  - ➤ दक्षिण भारत के पर्व
  - ➤ पूर्वोत्तर भारत के पर्व
- सांस्कृतिक महोत्सव

परिचय (Introduction)

- भारत में विभिन्न समुदायों और धर्मों के लोग परस्पर प्रेम और भाईचारे के साथ निवास करते हैं। इन विभिन्न धर्मों से संबंधित लोगों के विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक और पारंपरिक त्योहार आपसी सौहाद एवं सामाजिक सद्भावना के साथ मनाए जाते हैं। ये मेले एवं त्योहार आस्था और धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के विभिन्न रूपों की प्रस्तुति करते हैं।
- भारत में मेले एवं त्योहार देश की संस्कृति और प्राचीन परंपराओं का जीवंत प्रतिनिधित्व करते हैं। देश में मनाए जाने वाले प्रत्येक मेले एवं त्योहार को अनुष्ठानों, परंपराओं, किंवदंतिमों तथा इतिहास के आधार पर एक विशिष्ट पहचान भी मिली हुई है।
- भारत में मनाए जाने वाले मेलों एवं त्योहारों से विभिन्न समुदायों की जीवन शैली और संस्कृति की जानकारी प्राप्त होती है। इन समारोहों से देश की व्यापक विविधता, जैसे- कला एवं संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन आदि के बारे में भी पता चलता है।
- भारत में आयोजित होने वाले विभिन्न त्योहारों के माध्यम से प्रकृति के साथ सामंजस्य और जुड़ाव को देखा जा सकता है। ये त्योहार पर्यावरण संरक्षण के आदर्श को जीवन में अपनाने की प्रेरणा देते हैं।
- भारत में मनाए जाने वाले विभिन्न उत्सवों को राष्ट्रीय, धार्मिक और लोक आयोजनों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

राष्ट्रीय पर्व (National Fastivals)

- 26 जनवरी को देशभर में गणतंत्र दिवस का पर्व मनाया जाता है। 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू हुआ था जिसके उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष गणतंत्र दिवस पर्व मनाया जाता है। विदित है कि गणतंत्र दिवस पर दिल्ली के राजपथ पर एक भव्य परेड का आयोजन होता है जिसमें देश की सांस्कृतिक विविधता और सैन्य सामर्थ्य का प्रदर्शन किया जाता है।
- 15 अगस्त, 1947 के दिन भारत को ब्रिटिश आधिपत्य से स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी। अत: प्रतिवर्ष यह दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में सँजोए रखने और उनका पालन करने के उद्देश्य से यह पर्व मनाया जाता है।

करमा

- यह जनजातियों का एक कृषि पर्व है जिसे मुख्य रूप से ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में मनाया जाता है।
- यह पर्व हो, मुंडा, ओराँव, संथाली, कोरबा आदि जनजातियाँ मनाती हैं।
- यह पर्व प्रतिवर्ष भाद्रपद माह (जुलाई-अगस्त माह में) के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को आयोजित किया जाता है।
- इस अवसर पर देवता 'करम' और देवी 'करमसानी' की पूजा की जाती है जिन्हें करम वृक्ष की एक शाखा के रूप में दर्शाया जाता है। स्थानीय लोग इस वृक्ष को पवित्र मानते हैं।

- इस पर्व के दौरान पुरुषों और महिलाओं द्वारा संयुक्त रूप से करम नृत्य प्रस्तुत किया जाता है।

मड़ई

- यह छत्तीसगढ़ का एक लोकप्रिय आदिवासी त्योहार है।
- इस त्योहार में लोकनृत्य और संगीत की प्रस्तुति की जाती है। साथ ही, बकरों की बलि जैसी विभिन्न अनुष्ठानिक क्रियाएँ भी संपन्न की जाती हैं।
- यह त्योहार प्रतिवर्ष दिसंबर से मार्च तक मुख्य रूप से कांकेर, बस्तर और दंतेवाड़ा क्षेत्रों में आयोजित किया जाता है।

भगोरिया

- यह त्योहार मध्य प्रदेश के पश्चिम निमाड़ (खरगोन) और झाबुआ ज़िले में आयोजित किया जाता है।
- यह आदिवासियों का एक प्रमुख त्योहार है जिसमें युवक-युवतियों को अपने जीवनसाथी के चयन का अवसर दिया जाता है।
- यह त्योहार फरवरी या मार्च माह में मनाया जाता है।

गणगौर

- गणगौर में गण शब्द का अर्थ 'शिव' और गौर शब्द का अर्थ 'गौरी' है। इस प्रकार यह त्योहार भगवान शिव और देवी पार्वती को समर्पित है।

- राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, गुजरात और मध्य प्रदेश के कुछ भागों में यह त्योहार चैत्र माह में मनाया जाता है।
- इस अवसर पर विवाहित महिलाएँ अपने पति के स्वास्थ्य और प्रसन्नता के लिये गणगौर की पूजा करती हैं।

छठ

- छठ बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश में मनाया जाने वाला एक प्रमुख हिंदू त्योहार है।
- लगभग सभी सभ्यताओं में 'भगवान सूर्य' की पूजा की जाती है, किंतु बिहार में छठ पर्व पर इसका एक अनूठा स्वरूप देखने को मिलता है, छठ पर्व पर पूजा के दौरान उदित होते सूर्य के साथ ही अस्त होते हुए सूर्य की भी पूजा की जाती है।

पूर्वोत्तर भारत के पर्व (North East Indian Fastival)

बिहू

- यह असम का सबसे महत्त्वपूर्ण त्योहार है जिसे वर्ष में तीन बार अलग-अलग नामों से मनाया जाता है।
- जनवरी माह के मध्य में मनाए जाने वाले बिहू को 'माघ' या 'भोगली बिहू' कहा जाता है। यह फसलों की कटाई समाप्त होने की खुशी में मनाया जाता है। इस अवसर पर लोग बांस और पेड़ों के सूखे पत्तों से अस्थायी ढाँचा बनाते हैं, जिसे 'मेजी' कहते हैं।
- बोहाग बिहू या रोंगाली बिहू को नववर्ष की शुरुआत के रूप में मनाया जाता है। प्रतिवर्ष 15 अप्रैल को यह त्योहार मनाया जाता है।
- अक्टूबर माह के मध्य में मनाए जाने वाले बिहू को 'काटी' या 'कोंगाली बिहू' कहते हैं।

हॉर्नबिल

- यह नागालैंड का एक लोकप्रिय त्योहार है।
- यह त्योहार पारंपरिक संगीत, नृत्य और प्रदर्शन के माध्यम से नागा संस्कृति का सशक्त प्रतिनिधित्व करता है।
- प्रतिवर्ष 1 से 10 दिसंबर के मध्य यह त्योहार मनाया जाता है।
- विदित है कि हॉर्नबिल नागालैंड में पाया जाने वाला एक विशेष प्रकार का पक्षी है।

लोसर

- तिब्बती शब्द लोसर का शाब्दिक अर्थ 'नववर्ष' होता है।
- यह सिक्किम का सबसे लोकप्रिय और महत्त्वपूर्ण त्योहार है।
- यह त्योहार सामान्यत: फरवरी माह में मनाया जाता है।
- सिक्किम के मठों में लामाओं द्वारा चाम नकाबपोश नृत्य प्रस्तुत किया जाता है जिसे लोसर समारोहों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

नोंगक्रेम

- यह मेघालय का एक धार्मिक नृत्य महोत्सव है।
- मेघालय की खासी पहाड़ियों में अवस्थित सांस्कृतिक केंद्र समिट में प्रतिवर्ष नवंबर माह में शरद ऋतु के दौरान यह महोत्सव मनाया जाता है।
- इस महोत्सव के अवसर पर नोंगक्रेम नृत्य प्रस्तुत किया जाता है।
- इस पाँच दिवसीय धार्मिक त्योहार का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा 'पोंबलंग' अर्थात् बकरों की बलि है।

चपचार कूट

- यह मिज़ोरम में मिज़ो जनजातियों का सबसे बड़ा और सर्वाधिक खुशहाली वाला त्योहार है।
- यह एक बसंत त्योहार है जिसे प्रतिवर्ष मार्च माह में मनाया जाता है।
- रात में पारंपरिक बांस नृत्य 'चेरव' का प्रदर्शन मुख्य समारोह में किया जाता है।

इकाई

14

भारत में धर्म एवं दर्शन
(Religion and Philosophy in India)

भारतीय धर्म
- पृष्ठभूमि
- सिंधु घाटी सभ्यता में धर्म
- सनातन/हिंदू धर्म
- वैदिक धर्म
- हिंदू धर्म के प्रमुख मत
- वैष्णव परंपरा के प्रमुख संप्रदाय
- शैव धर्म के प्रमुख संप्रदाय
- दक्षिण भारत में शैव संप्रदाय
- शाक्त या शक्ति संप्रदाय
- अन्य हिंदू परंपराएँ
- आधुनिक काल में हिंदू धर्म के पुनरुत्थान के लिये चलाए गए आंदोलन
- बौद्ध धर्म
- जैन धर्म
- इस्लाम
- ईसाई धर्म
- पारसी धर्म
- यहूदी धर्म
- सिख धर्म
- भक्ति एवं सूफी आंदोलन

भारतीय दर्शन
- भूमिका
- रूढ़िवादी विचारधारा
  - सांख्य दर्शन
  - योग दर्शन
  - न्याय दर्शन
  - वैशेषिक दर्शन
  - मीमांसा दर्शन
  - वेदांत दर्शन
- धर्म-विरोधी विचारधारा
  - चार्वाक/लोकायत दर्शन

भारतीय धर्म (Indian Religion)

पृष्ठभूमि (Background)

- भारतीय उपमहाद्वीप को धर्मों का पालना (Craddle of Religions) कहा गया है। सांस्कृतिक तथा भौगोलिक विविधता ने भारत में न सिर्फ प्रचलित विचारधाराओं और परंपराओं के खंडन का अवसर प्रदान किया, बल्कि नए धर्मों और मतों को फलने-फूलने का भी पर्याप्त अवसर दिया।
- प्राचीन भारत में धार्मिक कट्टरता और उन्माद का स्वरूप वर्तमान युग जैसा न था, अप्रासंगिक विचारधाराओं को उचित तर्कों द्वारा खंडित किया जा सकता था। शासकों द्वारा धर्मविशेष को प्रश्रय देने के बावजूद धार्मिक अत्याचार के उदाहरण कम ही मिलते हैं। छठी सदी ईसा पूर्व में श्रमण आंदोलन के फलस्वरूप कई नए मतों का जन्म हुआ तथा जैन और बौद्ध अलग धर्म के रूप में उभरकर सामने आए।
- इस्लाम के आगमन के कारण भारतीय धर्मों के समक्ष अस्तित्व बचाए रखने का संकट उत्पन्न हो गया। यह संक्रमण का दौर था जिसमें एक तरफ बलपूर्वक धर्म परिवर्तन कराए जा रहे थे, वहीं दूसरी तरफ भक्ति और सूफी आंदोलनों ने सामाजिक समरसता कायम करने के प्रयास किये। इन्हीं सब के बीच गुरुनानक देव ने वैयक्तिक समानता पर आधारित सिख धर्म की स्थापना की।
- भारत में यूरोपियों के आगमन के साथ ईसाई मिशनरियों ने धर्म परिवर्तन कराने का कार्य शुरू कर दिया। इन्होंने भारतीय धर्म एवं संस्कृति को निम्नतर दिखाने का भी प्रयास किया। भारतीय संस्कृति में व्याप्त बुराइयों को दूर करने और इसकी श्रेष्ठता को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत करने के लिये कई आंदोलन चलाए गए जिनमें ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, आर्य समाज और रामकृष्ण मिशन प्रमुख हैं।

- ऋग्वेद के देवता रूद्र, शिव का ही प्रारंभिक रूप हैं। ये अत्यंत क्रोधी स्वभाव के थे। इनमें विनाशकारी एवं कल्याणकारी दोनों शक्तियाँ निहित थी।
- एक धर्म संप्रदाय के रूप में 'शैव धर्म' का उदय संभवत: शुंग-सातवाहन काल में हुआ।
- शिव की पूजा मानव एवं लिंग दोनों रूपों में की जाती है।
- लिंग पूजा का प्रथम उल्लेख मत्स्य पुराण से प्राप्त होता है। महाभारत के अनुशासन पर्व में भी लिंग पूजा का प्रमाण मिलता है।
- वायु पुराण एवं मत्स्य पुराण में शिव की पूजा एवं महिमा का उल्लेख प्राप्त होता है।

शैव धर्म के प्रमुख संप्रदाय (Major Sects of Shaivism)

गुप्तकाल में शैव धर्म के अनेक संप्रदायों का उदय हुआ। वामन पुराण में इनकी संख्या चार बताई गई है।

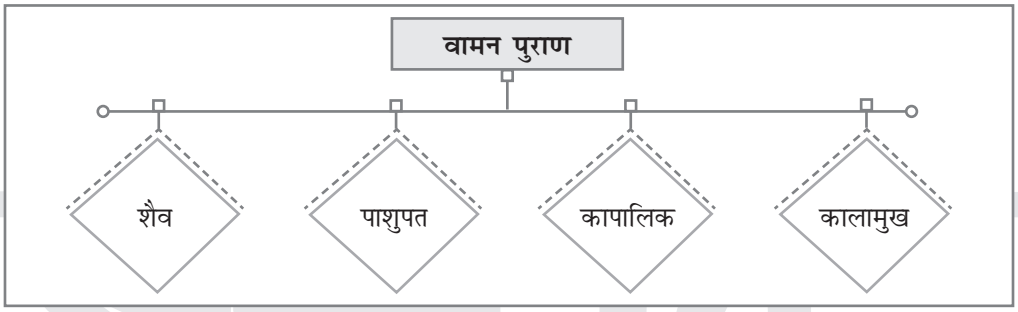

शैव संप्रदाय में शिव कर्ता हैं, करण शक्ति और उत्पादन बिंदु है। विद्या, क्रिया, योग एवं चर्या इस मत के चार पाद है।

पाशुपत (Pashupat)

- इस संप्रदाय का उन्नत रूप 'गुप्तकाल' में दृष्टिगोचर होता है। इसके तीन अंग पति अर्थात् स्वामी, पशु अर्थात् व्यक्ति या आत्मा और पाश अर्थात् बंधन हैं।
- इसमें पशुपति के रूप में शिव की आराधना की जाती है।
- इस संप्रदाय को 'लकुलीश या नकुलीश संप्रदाय' के नाम से भी जाना जाता है। मान्यता है कि इसका प्रवर्तन भगवान शिव के अवतार 'लकुलीश' द्वारा किया गया है। वायु पुराण, लिंग पुराण और कूर्म पुराण में उद्धृत शिव के अवतारों की सूची में लकुलीश का उल्लेख मिलता है।
- यह शैव धर्म का सर्वाधिक प्राचीन संप्रदाय है, इसके अनुयायी को 'पंचार्थिक' कहा जाता है।
- इस संप्रदाय का उत्पत्ति स्थल गुजरात क्षेत्र तथा इसके प्रवर्तक लकुलीश का उत्पत्ति स्थल 'कायावरोहण' (गुजरात) बताया जाता है। इस क्षेत्र के 'झरपतन' नामक स्थान से सातवीं सदी की लकुलीश की मूर्ति का साक्ष्य प्राप्त हुआ है।
- लिंग पुराण में उल्लिखित लकुलीश के चार प्रमुख शिष्यों में 'कुशिक', 'गर्ग', 'मित्र' और 'कौरुष्य' हैं।
- इस संप्रदाय के अनुयायी एक दंड धारण करते थे, इसे शिव का प्रतीक माना जाता था।
- बाणभट्ट ने अपने ग्रंथ कादंबरी में इस संप्रदाय का उल्लेख किया है। इसके अनुसार, इस मत के अनुयायी अपने मस्तक पर भस्म लगाते थे तथा रूद्राक्ष की माला धारण करते थे।

- तमिल भक्ति आंदोलन और मंदिर पूजा के मध्य संबंध के परिणामस्वरूप जो प्रतिक्रिया हुई वह बसवन्ना, अल्लमा प्रभु और अक्कमहादेवी द्वारा प्रारंभ किये गए वीरशैव आंदोलन में स्पष्टत: दिखाई देती है।
- इसने सभी व्यक्तियों की समानता के पक्ष को रखा और जात-पात, ब्राह्मणवादी विचारधारा, कर्मकांडों एवं मूर्तिपूजा का विरोध किया।
- इसमें शिवलिंग की उपासना की जाती है। शिवलिंग की पूजा-अर्चना का प्रारंभिक साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता से मिलता है।
- इसके प्रवर्तक अल्लभ प्रभु और उनके शिष्य बासव थे। यह एकेश्वरवादी संप्रदाय है।
- इसमें 'अष्टवर्ण' का आयोजन महत्त्वपूर्ण है जिसमें आठ अनुष्ठान गुरु, लिंग, विभूति, रुद्राक्ष, मंत्र, तीर्थ, जंगम एवं प्रसाद शामिल हैं। इसमें मांस और मदिरा के सेवन पर प्रतिबंध है।

दशनामी (Dashanami)

- यह शंकराचार्य द्वारा स्थापित संप्रदाय है। इसके उपासकों को 'वैदिक शैव' कहा जाता है।
- इसमें संन्यासियों को दस कोटियों और दो प्रकारों क्रमश: दंडधारियों और परमहंस में बाँटा गया है।

नाथपंथी (Nathpanthi)

- नाथ संप्रदाय के आराध्यदेव शिव है जिन्हे, 'अलख' के नाम से जाना जाता है। इसके उपासक योग और तंत्र को मोक्ष का प्रमुख मार्ग मानते हैं।
- नाथ संप्रदाय का संस्थापक गुरु मत्स्येंद्रनाथ को माना जाता है। इसका व्यापक प्रचार-प्रसार इनके शिष्य गोरखनाथ द्वारा किया गया था।
- गुरु मत्स्येंद्र नाथ को 'हठयोग' का संस्थापक भी माना जाता है जिसमें आसनों या योग-मुद्राओं पर अधिक बल दिया जाता है।
- इस पंथ में नौ नाथ तथा चौरासी सिद्धों की परंपरा की मान्यता है।

नाथपंथी

अघोरी संप्रदाय (Aghori Sect)

- यह भयंकर और अतिमार्गी प्रवृत्ति वाला संप्रदाय है जिसके उपासक सभी क्रियाकलापों को सरल और सहज या अघोर मानते हैं।
- इसे गोरखनाथ के शिष्य ब्रह्मगिरी द्वारा स्थापित किया गया है।
- इसके संन्यासी अपने शरीर पर श्मशान की भस्म लगाते हैं और एक विशेष प्रकार का चिह्न धारण करते हैं जो हिंदू त्रिपदी एकता को दर्शाता है।

अघोरी पंथ के एक संन्यासी का दृश्य

नाथपंथी, सिद्ध और योगी

इस काल में नाथपंथी, सिद्ध और योगी जैसे अनेक ऐसे धार्मिक समूह उभरे जिन्होंने तर्क-वितर्क का सहारा लेकर रूढ़िवादी धर्म के कर्मकांडों और अन्य बनावटी पहलुओं तथा समाज-व्यवस्था की आलोचना की। उन योगीजनों ने संसार का परित्याग करने का समर्थन किया। उनके विचार से निराकार परम सत्य का चिंतन-मनन और उसके साथ एक हो जाने की अनुभूति ही मोक्ष का मार्ग है। इसके लिये उन्होंने योगासन, प्राणायाम और चिंतन-मनन जैसी क्रियाओं के माध्यम से मन एवं शरीर को कठोर प्रशिक्षण देने की आवश्यकता पर बल दिया। ये समूह खासतौर पर 'नीची' कही जाने वाली जातियों में बहुत लोकप्रिय हुए क्योंकि रूढ़िवादी धर्म की आलोचना ने इन जातियों के लिये भक्ति का एक आधार तैयार किया जो आगे चलकर उत्तरी भारत में लोकप्रिय हुआ।

भक्ति आंदोलन का योगदान (Contribution of Bhakti Movement)

- इसने तत्कालीन समाज और धर्म में व्याप्त कुरीतियों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया और समानता पर बल देकर समतावादी समाज स्थापित करने का प्रयास किया।
- भक्ति आंदोलन ने स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा और साहित्य के विकास को प्रोत्साहित किया, उदाहरणस्वरूप हिंदी, मराठी, मलयालम, तथा गुजराती भाषा आदि।
- भक्ति आंदोलन के संतों ने धार्मिक सद्भाव को प्रोत्साहित किया और हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया।
- इसने वैदिक कर्मकांडों के स्थान पर भजन एवं कीर्तनों के माध्यम से ईश्वर की भक्ति और उपासना पर बल दिया।
- वर्ण व्यवस्था की कठोरता में कमी लाने में भक्ति आंदोलन के संतों की प्रमुख भूमिका रही है।

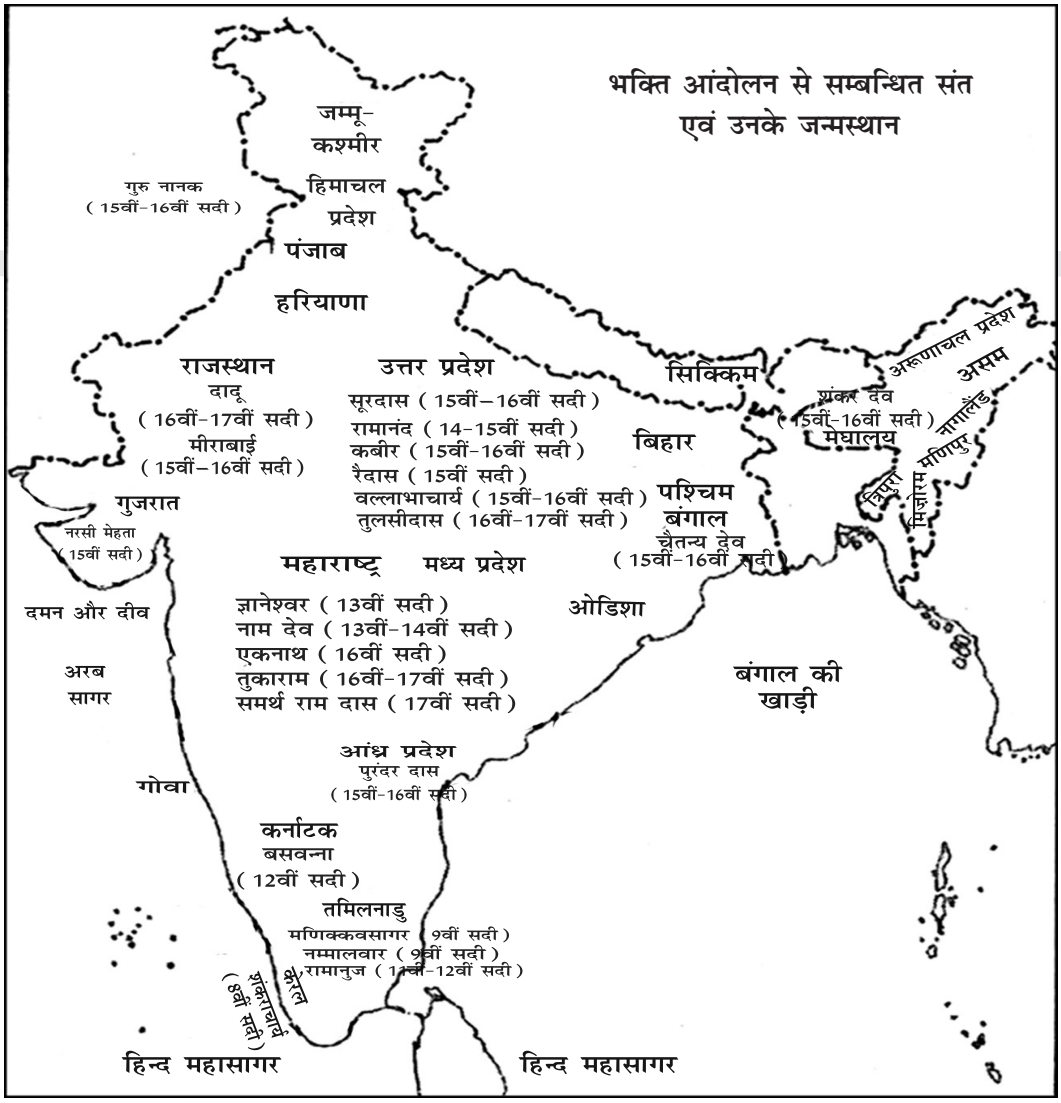

इकाई

15

भारत में कैलेंडर
(Calendar in India)

- परिचय
- कैलेंडर निर्माण हेतु महत्त्वपूर्ण संकल्पनाएँ
  - भूमध्यरेखा या विषुवत रेखा
  - विषुव
  - अयनांत
- कैलेंडर के निर्माण हेतु अपनाई गई पद्धतियाँ
  - सौर पद्धति
  - चंद्र पद्धति
  - चंद्र-सौर पद्धति
- हिंदू पंचांग में प्रयुक्त विविध माह
- हिंदू पंचाग में प्रयुक्त पक्ष एवं तिथि (दिवस)
- हिंदू पंचांग
  - तिथि
  - वार
  - करण
  - नक्षत्र
  - योग
- विभिन्न युगों में निर्मित भारतीय कैलेंडर
  - विक्रम संवत्
  - शक संवत्
  - हिजरी कैलेंडर
  - ग्रेगोरियन कैलेंडर
- भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर

परिचय (Introduction)

- मानव समाज के विभिन्न कार्यों और गतिविधियों के बेहतर संचालन हेतु ऋतुओं में चक्रीय परिवर्तन का हिसाब-किताब रखने की आवश्यकता महसूस की गई। इस संदर्भ में, एक ऐसी प्रणाली का जन्म हुआ जिसे 'कैलेंडर' के नाम से जाना गया।
- ऋतुओं में होने वाले इस चक्रीय परिवर्तन का ज्ञान मनुष्य के कृषि संबंधी कार्यों के बेहतर क्रियान्वयन के लिये अत्यावश्यक था। साथ ही, धार्मिक, व्यापारिक-वाणिज्यिक, प्रशासनिक तथा दैनिक कार्यों के लिये भी समय का हिसाब-किताब रखा जाना आवश्यक हो गया था।
- इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विश्व की विभिन्न सभ्यताओं में समय-समय पर कैलेंडर का विकास किया गया। विदित है कि ये कैलेंडर सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी की गतियों को आधार बनाकर निर्मित किये गए।

कैलेंडर निर्माण हेतु महत्त्वपूर्ण संकल्पनाएँ (Important Concepts for Calendar Creation)

भूमध्यरेखा या विषुवत रेखा (Equator)

- भूमध्यरेखा वह काल्पनिक रेखा है जो पृथ्वी की सतह पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों से एक समान दूरी पर स्थित होती है। यह रेखा पृथ्वी को उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्धों में विभक्त करती है।

अधिक मास या मल मास

सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में गति करता है। इस दौरान सूर्य की आभासी गति असमान होने के कारण सूर्य द्वारा विभिन्न राशियों से गुज़रने वाली अवधि भी असमान होती है। इस प्रकार, किसी एक राशि से दूसरी राशि में सूर्य के प्रवेश को संक्रांति या संक्रमण कहते हैं। संक्रांति की यह स्थिति प्रत्येक माह में आती है, फलतः एक वर्ष में 12 संक्रांति या संक्रमण होते हैं। कभी-कभी किसी चंद्र मास के दौरान सूर्य किसी भी राशि से होकर नहीं गुज़रता, अतः जिस अवधि के दौरान जब कोई संक्रांति नहीं होती, तो उस स्थिति को 'अधिक मास' की संज्ञा दी जाती है।

चंद्र-सौर पद्धति (Lunar-Solar Method)

- इस पद्धति के अंतर्गत वर्ष को सौर पद्धति और मासों को चंद्र पद्धति द्वारा निर्धारित किया जाता है।
- विदित है कि भारतीय पंचांग व्यवस्था में वर्ष की गणना सौर वर्ष के आधार पर तथा माह की गणना चंद्र वर्ष के आधार पर की जाती है।
- इस पद्धति के अंतर्गत भी हिंदू पंचांग में 2 से 3 वर्ष के पश्चात् एक अतिरिक्त मास को जोड़ना पड़ता है जिसे अधिक मास कहते हैं।

हिंदू पंचांग में प्रयुक्त विविध माह (Miscellaneous Months used in Hindu Calendar)

- सौर वर्ष में सम्मिलित कुल 12 माहों के नाम 12 राशि चक्र चिह्नों के आधार पर रखा जाता है। विदित है कि सूर्य एक राशि को जितने समय में पार करके दूसरी राशि में प्रवेश करता है, उतने समय को सौर मास की संज्ञा दी जाती है। ये 12 राशियाँ इस प्रकार हैं– मेष (एरीज), वृषभ (टॉरस), मिथुन (जैमिनी), कर्क (केंसर), सिंह (लियो), कन्या (वर्गो), तुला (लिब्रा), वृश्चिक (स्कॉर्पियो), धनु (सैजिटेरियस), मकर (केप्रिकॉर्न), कुंभ (एक्वेरियस) और मीन (पाइसेज)।
- चंद्र वर्ष में सम्मिलित माहों के आरंभ होने के दो तरीके हैं जिन्हें अमासांत और पूर्णिमांत कहते हैं। पूर्णिमा के अगले दिन शुक्ल पक्ष से शुरू होकर अमावस्या को पूरा होने वाला चंद्र माह 'अमासांत' कहलाता है। दूसरी तरफ, अमावस्या के अगले दिन कृष्ण पक्ष से शुरू होकर पूर्णिमा को पूरा होने वाला चंद्र माह 'पूर्णिमांत' कहलाता है। इस तरह चंद्र माह अमावस्या या पूर्णिमा को समाप्त होते हैं। स्पष्ट है कि चंद्रमा की कला की घट-बढ़ वाले दो पक्षों (कृष्ण और शुक्ल) को मिलाकर एक चंद्र मास का निर्माण होता है। सूर्य और चंद्र मासों में से चंद्र मास ही भारत के अधिकतर भागों में प्रचलित है।

हिंदू पंचाग में प्रयुक्त पक्ष एवं तिथि (दिवस) (Paksh and Tithi used in Hindu Calendar)

- हिंदू कैलेंडर के महीनों को पक्षों या पखवाड़ों में वर्गीकृत किया जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं– 'शुक्ल पक्ष' और 'कृष्ण पक्ष'।
- शुक्ल पक्ष अमावस्या के अगले दिन और कृष्ण पक्ष पूर्णिमा के अगले दिन से प्रारंभ होता है।
- चंद्र दिवस को तिथि और सौर दिवस को 'दिवस' कहा जाता है। तिथि की समयावधि सौर दिवस की अपेक्षा कम होती है। एक तिथि की औसत अवधि 23 घंटा, 37 मिनट होती है जो कि एक दिवस की तुलना में 23 मिनट कम है।

इकाई

16

भारत के सांस्कृतिक संस्थान
(Cultural Institutions of India)

- परिचय
- भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
- भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण
- भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्
- नेहरू मेमोरियल संग्रहालय एवं पुस्तकालय
- भारतीय शिल्प परिषद्
- भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय
- सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र
- भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक विरासत ट्रस्ट
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र
- क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र
- ऑल इंडिया रेडियो
- दूरदर्शन
- भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार
- राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन
- कलाक्षेत्र फाउंडेशन
- संगीत नाटक अकादमी
- साहित्य अकादमी
- ललित कला अकादमी
- राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय
- फिल्म समारोह निदेशालय
- भारत भवन
- एशियाटिक सोसाइटी
- भारतीय संग्रहालय, कोलकाता
- केंद्रीय सचिवालय पुस्तकालय
- राष्ट्रीय संग्रहालय
- राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय
- राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

परिचय (Introduction)

- भारतीय संविधान में राज्य की नीति के निदेशक तत्त्वों में राष्ट्रीय महत्त्व के स्मारकों, स्थानों और वस्तुओं के संरक्षण हेतु उचित प्रावधान किये जाने के संदर्भ में राज्य को निर्देश दिया गया है।
- संविधान में वर्णित मूल कर्त्तव्यों के अंतर्गत देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य है कि वह सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझते हुए उसका परिरक्षण करें।
- संविधान में उल्लेखित इन्हीं आदर्शों के आधार पर भारत में कई ऐसे संस्थानों की स्थापना की गई जिनके माध्यम से भारतीय संस्कृति का पुनरुद्धार करने का कार्य किया जा रहा है। कुछ प्रमुख सांस्कृतिक संस्थानों का विवरण इस प्रकार है–

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India)

- संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण' राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासतों के पुरातत्त्वीय अनुसंधान और संरक्षण हेतु एक प्रमुख संगठन है। इसकी स्थापना वर्ष 1861 में अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा की गई थी। कनिंघम ही इस संस्थान के प्रथम महानिदेशक भी थे।
- इस संस्थान का प्रमुख कार्य राष्ट्रीय महत्त्व के प्राचीन स्मारकों और पुरातात्त्विक स्थलों में संचित भौतिक और मूर्त विरासत का उचित रखरखाव करना है।

- यह संस्थान भारत के संस्कृति मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संस्थान है जो आधुनिक और समकालीन इतिहास पर शैक्षिक अनुसंधान को बढ़ावा देता है।
- वर्ष 1929-30 में निर्मित तीन मूर्ति भवन, वर्ष 1948 में देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का निवास स्थान बना। वर्ष 1964 में नेहरू के निधन के पश्चात् भारत सरकार ने इसे 'नेहरू मेमोरियल संग्रहालय एवं पुस्तकालय' बना दिया।

भारतीय शिल्प परिषद् (Crafts Council of India)

- वर्ष 1964 में भारतीय शिल्प परिषद् की स्थापना कमला देवी चट्टोपाध्याय द्वारा की गई थी जिसका मुख्यालय चेन्नई में है।
- यह परिषद् भारत का एक स्वैच्छिक गैर-लाभकारी संगठन है जो भारत में हस्तशिल्प उद्योग को विकसित और संरक्षित करने वाले क्रियाकलापों को प्रोत्साहन देता है।
- इस परिषद् का मुख्य उद्देश्य शिल्पकारों के हितों की रक्षा करना और शिल्प परंपरा को संरक्षित करना है। इस गैर-सरकारी संगठन द्वारा कमला नाम से दुकानों की शृंखला भी स्थापित की गई जहाँ कला और शिल्प को संरक्षण प्रदान किया जाता है।
- यह परिषद् विश्व शिल्प परिषद् से संबंधित है जो शिल्प क्षेत्र में काम करने वाला एकमात्र गैर-सरकारी अंतर्राष्ट्रीय संगठन है। यह परिषद् विश्व शिल्प परिषद् के एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सभी गतिविधियों में शामिल होता है।

भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद् (Indian Council of Historical Research)

- 'भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद्' एक स्वायत्त संगठन है जिसकी स्थापना वर्ष 1972 में सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम (1860 का अधिनियम XXI) के तहत की गई थी।
- आई.सी.एच.आर. ने देश के दूरस्थ क्षेत्रों में पहुँच बनाने हेतु पुणे, बंगलुरु और गुवाहाटी में तीन क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किये हैं।
- इस परिषद् के उद्देश्यों में निम्नलिखित शामिल हैं–
  - ➤ इतिहासकारों को एक साथ लाने और उनके बीच विचारों के आदान-प्रदान के लिये एक मंच प्रदान करना।
  - ➤ इतिहास अनुसंधान को उचित दिशा देना और इतिहास के उद्देश्यपूर्ण एवं वैज्ञानिक लेखन को बढ़ावा देना तथा प्रोत्साहित करना।
  - ➤ इतिहास संबंधी शोध कार्यक्रम एवं परियोजनाओं को प्रायोजित करना और इतिहास अनुसंधान कार्य में लगी संस्थाओं एवं संगठनों को सहायता देना।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय (Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya)

- वर्ष 1977 में भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण के एक भाग के रूप में 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय' ने नई दिल्ली से कार्य करना शुरू किया। वर्ष 1978 में इसे भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण से पृथक कर भारत सरकार के संस्कृति विभाग (वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय) के अधीन एक स्वतंत्र विभाग बनाया गया।

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	मुख्यालय
पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	कोलकाता
उत्तर-मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	प्रयागराज
उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	दीमापुर
उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	पटियाला
दक्षिण-मध्य क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	नागपुर
दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	तंजावुर
पश्चिम क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र	उदयपुर

ऑल इंडिया रेडियो (All India Radio)

- वर्ष 1936 में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन 'ऑल इंडिया रेडियो' (AIR) की स्थापना की गई।
- ए.आई.आर. जिसे अधिकारिक तौर पर आकाशवाणी के नाम से जाता है (वर्ष 1957 से), का मूल उद्देश्य 'बहुजनहिताय बहुजनसुखाय' अर्थात श्रोताओं को सूचना प्रदान करना, शिक्षित करना और उनका मनोरंजन करना है।
- ए.आई.आर. की विषय सामग्रियों, लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्रसार भारती अधिनियम, 1990 द्वारा नियंत्रित किया जाता है।
- वर्तमान में देश भर में ए.आई.आर. के 470 स्टेशन स्थापित हैं। ये स्टेशन देश के क्षेत्रफल के लगभग 92% आबादी के लगभग 99.19% लोगों तक अपनी सेवाओं को पहुँचा रहे हैं। यह 23 भाषाओं और 179 बोलियों में कार्यक्रम संचालित करता है।

दूरदर्शन (Doordarshan)

- प्रसार भारती के दो प्रभागों में से एक दूरदर्शन की स्थापना वर्ष 1959 में सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन की गई।
- वर्तमान में दूरदर्शन 34 सैटेलाइट चैनल संचालित कर रहा है जो देश की लगभग 92 प्रतिशत आबादी को मुफ्त में एयर डीटीएच सेवा प्रदान कर रहा है।
- दूरदर्शन अपने कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न भाषाओं में ज्ञान, विज्ञान, मनोरंजन, समाचार, खेलकूद और स्वास्थ्य से संबंधित सूचनाएँ उपलब्ध कराता है।

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives of India)

- भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार की स्थापना प्रशासनिक अभिलेखों के भंडारण हेतु की गई थी। इस संदर्भ में सबसे पहले ब्रिटिश सिविल ऑडिटर सैंडमेन ने वर्ष 1860 में सभी बहुमूल्य अभिलेखों को सुरक्षित करने के लिये 'ग्रैंड सैंट्रल आर्काइव' (विशाल केंद्रीय अभिलेखागार) की स्थापना हेतु अपने विचार प्रस्तुत किये थे।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (National Book Trust)

- भारत सरकार द्वारा वर्ष 1957 में 'नेशनल बुक ट्रस्ट' (NBT) की स्थापना की गई जो वर्तमान में शिक्षा मंत्रालय के अधीन एक सर्वोच्च निकाय है।
- इसके प्रमुख उद्देश्यों में अंग्रेज़ी, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में साहित्य का प्रकाशन कर उन्हें जनता के लिये कम कीमतों पर उपलब्ध कराना, पुस्तक मेलों, प्रदर्शनियों व सेमिनारों का आयोजन करना तथा लोगों को पुस्तक पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करना आदि शामिल हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(National Council of Educational Research and Training)

- वर्ष 1961 में भारत सरकार द्वारा स्कूली शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु नीतियों एवं कार्यक्रमों पर केंद्र एवं राज्य सरकारों को सहायता एवं सलाह प्रदान करने के लिये एक स्वायत्त संगठन के रूप में 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्' (NCERT) की स्थापना की गई।
- इसके प्रमुख उद्देश्य एवं कार्य हैं– स्कूली शिक्षा से संबंधित क्षेत्रों में शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देना; मॉडल पाठ्यपुस्तकों, पूरक सामग्रियों, समाचार-पत्र, पत्रिकाओं आदि को तैयार और प्रकाशित करना।
- साथ ही, शैक्षिक किट, मल्टीमीडिया डिजिटल सामग्रियों आदि को विकसित करना; राज्य शैक्षिक विभागों, विश्वविद्यालयों, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के साथ नवीन शैक्षिक तकनीकों का विकास और प्रसार करना; प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु एक नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करना आदि भी इसके प्रमुख कार्यों में शामिल हैं।
- एनसीईआरटी स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों हेतु एक कार्यान्वयन एजेंसी है।
- यह अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर विदेशी प्रतिनिधिमंडलों का दौरा करने और विकासशील देशों के शैक्षिक कर्मियों को विभिन्न प्रशिक्षण सुविधाएँ प्रदान करता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (Indira Gandhi National Open University)

- वर्ष 1985 में संसद के एक अधिनियम द्वारा 'इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय' (IGNOU) की स्थापना की गई। यह विश्वविद्यालय समावेशी शिक्षा के माध्यम से समावेशी ज्ञानयुक्त समाज का निर्माण करने का निरंतर प्रयास कर रहा है।
- इसने 'ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग' (ODL) मोड के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण की पेशकश करके 'सकल नामांकन अनुपात' (GER) को बढ़ाने की कोशिश की है।
- वर्तमान में, यह विश्वविद्यालय भारत एवं अन्य देशों में 30 लाख से अधिक छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाओं को पूरा कर रहा है। यह विश्वविद्यालय लगभग 200 प्रमाण-पत्र, डिप्लोमा, डिग्री तथा डॉक्टरेट कार्यक्रम प्रदान करता है।

संस्कृति IAS

अखिल मूर्ति के निर्देशन में

पढ़िये देश की सर्वश्रेष्ठ टीम से!

दिल्ली के साथ अब प्रयागराज में भी...

श्री अखिल मूर्ति इतिहास कला एवं संस्कृति	**श्री अमित कुमार सिंह** (IGNITED MINDS) एथिक्स	**श्री ए.के. अरुण** भारतीय अर्थव्यवस्था	**श्री सीबीपी श्रीवास्तव** (DISCOVERY IAS) राजव्यवस्था, सामाजिक न्याय गवर्नेंस, आंतरिक सुरक्षा
श्री कुमार गौरव भूगोल, पर्यावरण आपदा प्रबंधन	**श्री राजेश मिश्रा** भारतीय राजव्यवस्था अंतर्राष्ट्रीय संबंध	**श्री रीतेश आर जायसवाल** सामान्य विज्ञान विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी	**श्री विकास रंजन** (TRIUMPH IAS) सामाजिक मुद्दे

सामान्य अध्ययन

फाउन्डेशन कोर्स (प्रिलिम्स+मेन्स)

लाइव बैच भी उपलब्ध

वैकल्पिक विषय

इतिहास द्वारा – श्री अखिल मूर्ति	**भूगोल** द्वारा – श्री कुमार गौरव
राजनीति विज्ञान द्वारा – श्री राजेश मिश्रा	**दर्शन शास्त्र** द्वारा – श्री अमित कुमार सिंह (IGNITED MINDS)

सीसैट

कुल कक्षाएँ

120+

नियमित रिवीज़न

सामान्य अध्ययन एवं वैकल्पिक विषयों के लिये ऑनलाइन/पेनड्राइव कोर्स भी उपलब्ध

यूपीएससी एवं यूपीपीसीएस प्रारंभिक परीक्षा

टेस्ट सीरीज़

ऑफलाइन/ऑनलाइन

सामान्य अध्ययन एवं सीसैट

हिंदी एवं अंग्रेज़ी दोनों माध्यम

Demo एक निःशुल्क डेमो टेस्ट

sanskritiIAS.com
sanskritiIAS app

हेड ऑफिस
636, भू-तल,
मुखर्जी नगर, दिल्ली-09

9555-124-124

प्रयागराज केंद्र
7/3/AA/1, ताशकंद मार्ग,
पत्रिका चौराहा, प्रयागराज, उ.प्र.